भोजपुरिया अमन

भोजपुरी साप्ताहिक

वर्ष 01 : अंक 02 (संयुक्तांक) लखनऊ, शुक्रवार, 08 अप्रैल, 2011 पृष्ठ 12 मूल्य 1 रुपया

सम्पादकीय...

भोजपुरी खातिर 1966 में मोतीहारी में उठल रहल पहिलका मांग

एगो लम्बा इंतजार आ 46 बरिस के संघर्ष के बाद लगभग 25 करोड़ भोजपुरी भाषियन खातिर एगो निमन खबर आइल। उ इ कि भोजपुरी जल्दिए संविधान के अठवीं अनुसूची में शामिल हो जाई। भोजपुरी भाषा के संविधान के अठवीं अनुसूची में शामिल करे के पहिला मांग प्रगतिशील भोजपुरी समाज द्वारा सन् 1966 में मोतीहारी (पूर्वी चम्पारन) बिहार में तत्कालीन रेल मंत्री राम सुभग सिंह के अध्यक्षता में उठल रहल। ओकर आयोजन आचार्य विद्यार्थी ठाकुर लउरिया (चम्पारन) के साथ वशिष्ठ दूबे रामलखन पासवान आदि लोग कइले रहल। ओकरा बाद ओही साल (1966) में ही गाजीपुर (उ0प्र0) में केशव प्रसाद एडवोकेट के अध्यक्षता में विराट भोजपुरी सम्मेलन भइल आ ओह सम्मेलन में भोजपुरी भाषा के मान्यता आ भोजपुर राज्य के गठन के मांग उठल। ओकर आयोजन आचार्य इन्द्रजीत पाण्डेय, रामसूरत यादव, रविन्द्र श्रीवास्तव, रामजी राय, डॉ0 डी0एन0 प्रसाद, ढोढ़ा प्रसाद आदि लोग मिल के कइले रहल।

एह बाबत जब केन्द्रिय मंत्री चिदम्बरम् जी संसद के विशेष सत्र में खुशखबरी ले आवे के घोषणा कइलन त भारत समेत पूरा दुनिया में बसल 25 करोड़ भोजपुरी भाषी गदगद हो गइलन। एकरा साथे बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, दक्षिणी भारत, पश्चिम बंगाल, असम पूरा देश के साथ विदेश में बसल सब भोजपुरिया लोगन खातिर उ दिन बहुत खास हो गइल।

भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता दियावे में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना के पाण्डेय कपिल, उदयनारायण तिवारी आ महेन्द्र शास्त्री आदि लोग 1971 में मांग उठवले रहे लोग। तबसे इ संस्था सक्रिय भूमिका निभा रहल बा। 1966 से ले के अब तक प्रगतिशील भोजपुरी समाज भोजपुरी भाषा के मान्यता आ भोजपुर राज्य के गठन के मांग के ले के लगातार आन्दोलन कइले बा, जवना में चम्पारण, सारण, रोहतास, आरा भभुआ, बक्सर, बनारस, गाजीपुर, बलिया, मऊ, आजमगढ़, गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, सिद्धार्थनगर, महराजगंज, सीवान, गोपालगंज, कुशीनगर, मिर्जापुर के साथे लखनऊ, दिल्ली में भी धरना मिटिंग, जुलूस, पत्रक, ज्ञापन जनसभा, सम्मेलन कइलें बा। बाकिर आज के भोजपुरी लेखक, साहित्यकार, पत्रकार, संगठन के मुख्य लोग कहीं भी जाने–अनजाने ए सच्चाई के नाक कहीं उजागार लिखित रूप से चाहें मंच पर भी करेला। हॉ कुछ लोग आपन श्रेय लेबे खातिर जान के अनजान बनल रहेला। जबकि प्रगतिशील भोजपुरी समाज आज भी सक्रिय बा ओकरा आन्दोलन के जमीनी सचाई बा प्रमाण बा।

भोजपुरी भाषा के मान्यता, दियावे के पहल त आजादी के पहिले से शुरू हो गइल रहल। एहमें महान साहित्यकार पं0 राहुल सांकृतयामन जी आजादी के पहिलहि से भोजपुरी में कइगो पुस्तक लिखनीं, जवन एह भाषा के आगे ले जाये में कामयाब रहल। एह किताबन में 'देश रक्षक, मेहरारू के दुर्दशा, जोक, नइकी दुनिया, जपनिया राक्षस प्रमुख रहल। ओहीजा रघुवीर नारायण जी द्वारा बरिस 1911 में रचित 'बटोहिया' गीत आ भोजपुरी के शेक्सपीयर कहे जाये वाला भिखारी ठाकुर के विदेशिया, बेटी बेचवा आदि के महती भूमिका रहल।

भाषाविद आ भोजपुरी के मर्मज्ञ लोगन के मानल जाव त भोजपुरी भाषा के दुनिया में एगो महत्वपूर्ण स्थान दियावे में मारीशस, सूरीनाम, नीदरलैंण्ड, फीजी, नेपाल त्रिनीदाद, टोबेगो आदि देशन में बसल भोजपुरी भाषी लोगन के बहुत बड़हन योगदान बा। लगभग 150 बरिस पहिले पूर्वी उत्तर प्रदेश आ बिहार आदि राज्यन से जाके ए देशन में बंसल भोजपुरी भाषी लोगन के संघर्ष से एह भाषा के अद्भूत शाक्ति मिलल बा। साथ ही मारीशस के राष्ट्रपति आ प्रधानमंत्री जी द्वारा समय–समय पर एह भाषा के मान्यता दियावे के बात से भी दबाव बनके काम कइले बा।

भोजपुरी भाषा के मान्यता दियावे खातिर बिहार के पूर्व मंत्री आ साहित्यकार प्रभुनाथ सिंह जी के साथ पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह के विशेष भूमिका रहल बा। भोजपुरी समाज नई दिल्ली के अध्यक्ष अजित दूबे जी शुरू से ही शासन, प्रशासन में मान्यता के सवाल पर स्वागत योग्य भूमिका निभवले बानीं। विश्व भोजपुरी सम्मेलन देवरिया के डॉ0 अरूपेश निरन जी भी विशेष रूप से भोजपुरी के अलख जगवले बानी। पूर्वांचल एकता मंच नई दिल्ली के अध्यक्ष शिवाजी सिंह आ महासचिव संतोष पटेल भी देश–विदेश के भोजपुरी भाषियन के सम्मेलन, आन्दोलन के माध्यम से भाषा के मान्यता में आपन दावेदारी प्रमुखता से कइले बानी। संडे इंडियन भोजपुरी पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक आ ग्लोबल भोजपुरी मूवमेंट के ओंकारेश्वर पाण्डेय जी के भी एगो विशेष सराहनीय भोजपुरी के प्रचार–प्रसार पर भूमिका बा। ओकरा साथे देश के तमाम शहरन में सैकड़न भोजपुरी संस्थान सम्मेलन, पत्र–पत्रिका बा जवना के विशेष भूमिका बा। ओकरे बाद ऊँजोरिया डाट काम के सम्पादक डॉ0 ओ0पी0 सिंह, भोजपुरिया डाटकाम, पूर्वांचल एक्सप्रेस डाटकाम, जे0एन0यू0 भोजपुरी मंच के साथ दर्जन भर भोजपुरी डाट काम के सराहनीय कदम बा जवना के माध्यम से भोजपुरिया परिवार आपस में विश्व बन्धुत्व के भाव महशूस करता।

ओही तरह महुआ टी0वी0 चैनल के जलवा से भोजपुरी संसार में एगो अलग तहलका मचल आ प्रचार भइल। हमार टी0वी0 के साथे कईगो चैनल भी भोजपुरी के बढ़ावे के विशेष भूमिका आदा कर रहल बा।

आज भोजपुरी सिनेमा के हर जगह धूम मचल बा हालांकि बाजारवाद के प्रभाव से भोजपुरी के नुकसान भी भइल बा लेकिन दुनिया मे प्रचार प्रसार के श्रेय भी भोजपुरी कलाकार के बा जवना में शत्रुहन सिन्हा जी, मनोज तिवारी जी, रवि किशन जी, कृपाल सिंह के श्रेय बा, दिनेश लाल निरहुआ के भी लोकप्रिय भूमिका से भोजपुरी आगे बढ़ल बा।

भोजपुरी के सम्मान दियवला में मुख्य रूप से संजय निरूपम, सांसद (मुंबई), ओम प्रकाश यादव सांसद (सीवान), रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली), निरज शेखर सांसद, बलिया, योगी आदित्यनाथ जी सांसद गोरखपुर, महाबल मिश्र सांसद (दिल्ली), जगदम्बिका पाल (उ0प्र0) के साथे अनेक माननीय लोगन के विशेष सराहनीय कदम रहल बा।

पूरा देश में दर्जन भर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर/व्याख्याता लोगन के अग्रणी भूमिका रहल बा। भोजपुरी मैथिली अकादमी दिल्ली, भोजपुरी अकादमी पटना के साथ भोजपुरी समाज के नाम से जुड़ल अनेक संगठन के भी सराहनीय कदम बा। भोजपुरिया के करीब 10 हजार कवि, लेखक, साहित्यकार, आ कलाकार बाड़न जेकर भाषा के प्राण देबे में आपन योगदान बा उनके भी स्वागत बा, बधाई बा।

अन्त में भोजपुरिया अमन परिवार जाने अनजाने भोजपुरी माटी के पहरूआ, दुलरूवा सभलोगन के प्रति आभार प्रकट करत बधाई देरहल बा जे अपना माटी आ माई भोजपुरी भाषा के संवैधानिक मान्यता दियावे में एगो चींटी से लेके पहाड़ तक भूमिका निभवले बा। ओकरा साथे भोजपुरी भाषा के अल्पसंख्यक भाषा के दर्जा दियावे के मांग के उठला के सुगबुगाहट भी शुरू हो गइल बा। भोजपुरी भाषा के मान्यता के साथ भोजपुर राज्य के गठन के मांग भी धीरे–2 जोर पकड़ रहल बा।

भटक गइल बा लोक आ भ्रष्ट हो गइल बा तंत्र

अरब, मुगल आ अंग्रेजन के हजारन बरिस के विदेशी हुकुमत भी भारत के धरम अउर संस्कृति के समाप्त ना क पावल। प्राचीन सभ्यता मिश्र, मेसोपोटामिया, ग्रीक आ फ्रांस के सभ्यता बाहरी आक्रमण से प्रायः ध्वस्त हो गइल बाकिर भारत के साथे अइसन ना हो सकल। जवना के कारण बा इहवॉ के नैतिक आ आध्यात्मिक बल अउर सेवा भाव, आदमी एकरा के बुझे चाहें ना बुझे लेकिन पूंजीपति शोषक वर्ग एह रहस्य के जरूर जानता, ए से आज सगरो प्रचार तंत्र हमनिके एह प्राचीन अमूल्य धरोहर पर चोट कर रहल बा। परम पुरूष द्वारा निर्मित एह सुन्दर मानव समाज के भोगवादी, जड़तामूलक आ स्वार्थपरक बनावल जा रहल बा, अइसन विकट परिस्थिति में हमनिके सामने एह युग के महान दार्शनिक श्री पी0आर0 सरकार के जीवन के आध्यात्मिक मूल्यन पर आधारित एगो नया सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अउर सांस्कृतिक प्रउत (PROUT) दर्शन देके एगो नूतन ज्योति प्रज्वलित कइले बानीं। श्री पी0आर0 सरकार के प्रउत दर्शन के एगो छोटहन हिस्सा के एगो कड़ी के आधार पर भारतीय मूल अमरीकी निवासी अर्थशास्त्री प्रो0 रवि बत्रा जब 1990 के महामंदी' The great depression 1990 के किताब लिख्लन आ ओइमें भविष्य में आवे वाला अनेक भीषण सामाजिक आ आर्थिक विपदा के भविष्यवाणी कइलेरहलन आ ओकरा से बचे के उपाय भी बतवले रहलन। तब ओह किताब के प्रकाशक लोग छपवावे से इनकार क दिहलन लेकिन बाद में जब प्रो0 रवि बत्रा के भविष्यवाणी के मोताबिक घटना घटल त ओह किताब के मात्र एगोप्रति के पावे खातिर लोग मुंहमांगा कीमत देबे के तइयार हो गइल रहे।

आज हमरा देश में सुजसा खान मूंह बवले मंहगाई खड़ा बा,चरमावस्था पर राजनैतिक अपराध आ भ्रष्टाचार के करिया बादर दरद भरल अन्हरिया रात क देहले बा। भ्रष्टाचार के अतल–अनंत समंदर में विकास आ प्रगति के बड़का–बड़का योजना आ कार्यक्रम एह खातिर डूबकी लगा रहल बा, काहें कि एही समुंदर में अफसरशाही अइसन सर्वभक्षी मछरी बाड़ीसन जवन हरदम सरकारी धन के घोंटे के फिराक में रहेलिसन।

कवि केदारनाथ अग्रवाल के इयाद आवता..... ''पैसा है मेरा देश, जो किसी की जेब में है और किसी की जेब में नहीं है.... ।''

जब तोप मोकाबिल हो

आज अन्ना हजारे आ बाबा रामदेव जी के अनशन के फेरू धमक हो रहल बा। जबकि अन्ना जी आ रामदेव जी कवनो अइसन घोषणा पत्र जारी करीत लो, जवना में लिखल रहित कि जे आदमी एह बातन पर आपन राय साफ करी, एह बातन के समर्थन करत, जनता के साथ देबे के वादाकारी ओकरे के जनता समर्थन करी। उ सगरों आदमी जे अन्ना हजारे आ बाबा रामदेव जी के साथे महीनन आपन काम–काज छोड़ के लागल रहल। आज उ निराश बा, उनका बुझाता कि उ लोग जवना उत्साह से ए दुनु लोगन के समर्थन कइल, इ लोग ओकरा योग्य, चाहें पात्र बा कि ना। हमनिके लोकतंत्र खातिर ओइसहीं दुखद समय बा, जइसे समय आज से लगभग साल भर पहिले आइल रहल। ओह बेरा लागत रहल कि अन्ना हजारे जी आ बाबा रामदेव जी जइसन लोग देश में भ्रमणकरी, अब अइसन नेता नइखन लउकत, जे सत्ता में ना जाके जनता के बात करस आ जनता के बीच जास। लेकिन अइसन नइखे हो पावत।

आज इहो देखे के मिलता कि राष्ट्र भक्त आ समाज सेवी लोगन के निर्ल्लजता से कूचलल जा रहल बा। आतंकवाद आ नक्सलवाद से निपटे खातिर कवनों ठोस आ ईमानदार रणनिति नइखे एहहालत में यदि हम खुद के लोकतांत्रिक होखे के दावा करीं त कदाचितलोकतंत्र के परिभाषा बदल गइल होई। ए से आज लोकतंत्र में भटक गइल बा लोक आ भ्रष्ट हो गइल बा तंत्र।

बदी लोगन के संख्या लगभग 18000 से ऊपर बा जवना में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, तमिल आदि चरमपंथी कम्यूनिस्ट भी बाड़न। आखिर हजारन के तादात में एह बंदियन के साथे कइसन सलूक करेके चाहीं? एकरा से सम्बन्धित आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक मुद्दन के समाधान खातिर राजनैतिक संवाद के बढ़ावा देबे के ईमानदार पहल क के सगरों कैदी लोगन के मुक्ति के रास्ता खोलल उचित होई। एह विशाल देश के जटिल राजनैतिक परिदृश्य में वोल्टेयर के लोकतात्रिक विरासत के बुनियाद मजबूत करेके फौरी नुक्सा हो सकेला।

नेपाल में भोजपुरी

दशा आ दिशा

डॉ0 लटपट ब्रजेश

भारत के उत्तर दिशा आ हिमालय के पर्वतीय आ तराई क्षेत्र में अवस्थित, प्रकृति के गोद में बसल जंगल पर्वत आ नदी–नाल वन्य प्राणी से भरल पुरल आ पाल वंश द्वारा संस्थापित पूर्व में राजतंत्रीय व्यवस्था के अर्न्तगत संचालित राष्ट्र नेपाल प्राकृतिक सुषमा से सुशोभित बा। राजनीतिक उठापटक, राजवंशीय हत्याकाण्ड आ माओवादी आतंकवाद से त्रस्त राज्य नेपाल के राजधानी काठमाण्डू बा।

हिन्दु आ बौद्ध धर्मावलम्बी आबादी पुरी जनसंख्या के नब्बे फीसदी से भी अधिक बा। नेपाल के मुख्यतः दुगो प्राकृतिक विभाग में बॉटल जा सकेला, पर्वतीय क्षेत्र आ तराई क्षेत्र। पर्वतीय क्षेत्र के आबादी विरल बा जबकि तराई क्षेत्र के आबादी सघन बा जवना के अस्सी फीसदी लोग के भाषा भोजपुरी बा। पर्वतीय क्षेत्र में मूलतः पहाड़ी मूल के लोग बा बाकिर तराई क्षेत्र में पूर्णतः भोजपुरिया संस्कृति बा जवन भारतीय भोजपुरिया समाज से मिलेला। नेपाल तीन ओर से भारतीय भूभाग से घेरल बा। नेपाल के सीमा से सटल भारतीय राज्य में बिहार, उत्तर प्रदेश प्रमुख बा। संपूर्ण नेपाल में नेवाड़ी, नेपाली, मैथिली आ भोजपुरी भाषी लोग बसल बा इहा के सबसे लमहर आबादी मधेशी लोग के बा। मैथिली आ भोजपुरी भाषा भोजपुरी के ही एगो रूप बा। बाकिर राजनीतिक षड़यंत्र आ सियासी खेल के दुष्प्रभाव के कारण हमनी में भइल फुटमत थारू भाषा (जे मूलतः भोजपुरी हअ) आ मैथिली के मूल भोजपुरी से अलग–थलगकर देहल गईल बा जवना के दंश हमनी भोजपुरिया भाषी आजुओ झेल रहल बानी सॅ।

भोजपुरी नेपाल में चौथा भाषा के रूप में मान्यता पवले बिआ, आज काल्ह नेपाल में भोजपुरी साहित्य संस्कृति आ कला के विकासमें अपना भोजपुरिया घरोहर के संरक्षण, संवर्द्धन में भोजपुरी बौद्धिक विकास मंच नेपाल, भोजपुरी समाज नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान, नेपाल भारत भोजपुरी मित्र मंडली प्रगतिशील भोजपुरी साहित्य परिषद जइसन कई संस्था काज कर रहल बा। एह संस्थान के कई मूर्धन्य आलब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार लोग भोजपुरी साहित्य के हर विधन पर आपन कलम अबाध गति से चला रहल बा लोग।

भोजपुरी साहित्य में कई लेख संग्रह, गिति काव्य, खण्ड काव्य, महाकाव्य, कथा साहित्य आदि के प्रकाशन भईल बा जेमे विवशता, धधोर, भूत भॉवर, छितराईल घूँघरू, ऐ मौत तनि हॅस के जिए द, आदि प्रसिद्ध बा। नेपालीय भोजपुरी साहित्यकारन में जगदीश प्रो0 पंकज, सुनिल कुमार, ब्रहम देव राय, पं0 दीप नारायण मिश्र, शंभु प्रसाद कुशवाहा, विजय प्रकाश बीन, विक्रम साह, गोपाल ठाकुर, रामेश्वर मेहता, सतीशचन्द्र संजल, प्रो0 भाग्यनाथ गुप्ता, गोपाल अश्क, प्रो0 सचितानन्द सिंह, डॉ0 वंशीधर मिश्र, डॉ0 विश्वम्भर शर्मा, डॉ0 शशिभूषण बरणवाल, इन्द्र कुमार शाह, रामप्रसाद साह, बिकाउ गिरि, अनिल गौरव, संजय निशिथ, संतोष कुमार, शिवलाला साह, राजवीर यादव, उपेन्द्र सहनी, ध्रुवलाला प्रसाद सहनी सास्ती, नथुनी ठाकुर सुरेन्द्र गिरि, बाबूलाल यादव, मनोज पाठक, हरमेष द्विवेदी, नागेन्द्र प्रसाद कानु, दीनेश गुप्ता, राम निवास यादव, सुभाष जयसवाल, प्रभा नारायण यादव आदि के नाम उल्लेखनीय बा।

ओईसन भारतीय भोजपुरिया साहित्यकार जे पूर्णकालिक समय देके नेपालीय भोजपुरी के सही दिशा प्रदान करत आपना तन मन धन से लागल बा ओमे डॉ0 लटपट ब्रजेश, इन्द्रदेव कुँवर, अभियंता, शैलेन्द्र सुन, मो0 अशरफ अली, आश नारायण प्र0 अशोक, डॉ0 जयनारायण शर्मा निराला आ श्री कृष्ण पाण्डेय किसन के नाम अविष्मरणीय बा। पत्र पत्रिकन के रूप में सनेस साप्ताहिक सं0 विजय प्रकाश वीन आजु के समाद दैनिक (सं0– विजय प्रकाश बीन) भोजपुरी लोक मासिक (सं0– विजय प्रकाश बीन) गमक मासिक (सं0 गोपाल अश्क) भोजपुरी मॉटी मासिक (सं0 रामप्रसाद साह) अचरा मासिक (डॉ0 रामप्रसाद यादव) गोरख पत्र राष्ट्रीय दैनिक में स्थाई भोजपुरी स्तंभकार (दीनेश गुप्ता) आजुओ भोजपुरी साहित्य के प्रचार/प्रसार में लागल बाडें।

आजु तराई क्षेत्र में संचालित एफ एम रेडियों से जे भोजपुरी कला संस्कृति के जीवन्त रखले बा ओमे संस्कार, गढ़ी माई, इन्द्रेणी, नारायणी भोजपुरिया एफ एम आकास एफ एम, बीरगंज एफ एम आदि प्रमुख बा। नेपाल रेडिया, नेपाल दुरदर्शन, तराई टी0वी0 आदि में भोजपुरी में समाचार बाचन कविता पाठ एकांकी नाटक, गीत संगीत वार्ता आ परब त्योहार पर भोजपुरी में विशेष कार्यक्रम नियमित रूप से प्रस्तुत हो रहल बा।

वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में भी भोजपुरी पर काम शुरू हो गईल बा। प्राथमिक स्तर से लेके उच्च माध्यमिक स्तर तक ले विद्यालयस में भोजपुरी के एच्छिक विषय के रूप में पढ़ावे खातिर सरकारी स्तर पर मान्यता मिल चुकल बा। सरकार द्वारा बनल सिलेबस आ पुस्तक तैयारी समिति के कार्यशाला के आयोजन आ ओमे शामिल लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार सर्व श्री जगदीश प्रसाद पंकज, गोपाल ठाकुर, दिनेश गुप्ता, पं0 दीपनारायण मिश्रा, राकेश सिंह, गोपाल अश्क, डॉ0 वंशीधर मिश्र आदि के कड़ी मिहनत और लगन से पुस्तक तैयार हो के प्रकाशित हो रहल बा, आपढत्राई भी शुरू हो गईल बा। बाकिर एमे गति लावेला भोजपुरिया शिक्षक सब के जागरूकता बहुत जरूरी बा। भोजपुरी बौद्धिक विकास मंच नेपाल आ भारत संयुक्त रूप से मंच के संस्थापक डॉ0 लटपट ब्रजेश के दिशा निर्देश में प्रतिभा खोज अभियान शुरू कइले बा जेकरा खातिर मंच समय–समय पर पारंपरिक लोक गीतन (चकवा, पिड़िया, झिझिया, जट जटीन, फगुआ चैता) आ कबीतन पर प्रतियोगिता करावत रहेला। इ मंच हरेक साल भोजपुरी साहित्यकारन के जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कवि सम्मेलन में अमर शहीद श्याम किशोर स्मृति साहित्य सम्मान, स्व0 विश्वनाथ सिंह स्मृकित साहित्य सम्मान, स्व0 ब्रहमदेव राय स्मृति साहित्य सम्मान, स्व0 कंचन देव नारायण सिंह स्मृति साहित्य सम्मान आ मंच के वार्षिक साहित्य सम्मान भोजपुरी साहित्य कला आ संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा कर रहल साहित्यकारन के मंच के संस्थापक डॉ0 लटपट ब्रजेश के दिशा निर्देश में देहल जाला। अन्य परिषदों आ नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठानों भी हर साल कवनों ना कवनों कवि लेखक, कथाकार, नाटककार आ पत्रकार के सम्मानित करेलेन। एतना सब भईला के बावजुद अभियो नेपाल में सरकारी स्तर पर अन्य भाषा के अपेक्षा सहयोग के अभाव बा। हमनी आपन मशाल जरवले बानी आ जरवले रहम माकिर मनी के भारतीय भोजपुरिया अग्रेज साहित्यकारन के सहयोग आ समर्थन मिलत रही त बहुत जल्दी नेपाल में हमर भोजपुरी अपनपा सम्पन्नता आ वैभवता से सफलता के झंडा गाड़ दी आ हमर भोजपुरी देश के मुख्य भाषा बने के गौरव हासिल कर ली।

सभ्यता के बचावे के चुनौती

आचार्य संतोषनन्द अवधूत, नई दिल्ली

श्री श्री आनंद मूर्ति जी के वक्तव्य हवे कि साधुता ही सभ्यता के बचा सकेला। अगर सभ्यता के बचावे के बा त साधुता के बचावे के परी। साधु चरित्र व्यक्ति ही सभ्यता के बचा सकेला।

एकरा से दु गो बात स्पष्ट होता! सभ्यता से प्यार बा, मानवता से प्यार बा त साधू बनहिं के होई। दोसर बात कि एह साधुअन के असाधुअन से संग्राम करेके पड़ी, निरन्तर समझौता रहित संघर्ष करेके होई, जवना से असाधु लोग समाज में प्रबल होके, हर जगह हाबी होके, सभ्यता के विध्वंस ना कर पावस। इ दुनु स्थिति अपरिहार्य बा सभ्यता के विध्वंस से बचावे खातिर, महती विनष्टी के संभावना के टाले खातिर। खाली साधू भइला से काम ना चली। साधुता के संपत्ति के सुरक्षित राखत असाधुअन के सामाजिक जीवन में प्रभावशाली भइला से पूरा तरह से वंचित क दिहल जाव।

निश्चय ही सद्गुरू श्री श्री आनन्द मूर्ति जी के इ स्वप्नदर्शी चिंतन माननीय अनुकरणीय बा। एह दिशा निर्देश के पालन कइएके सभ्यता के सुखद, सुंदर, स्वर्णिम भविष्य सुनिश्चित कइल जा सकेला।

साधू के ह ऽ? साधू के मतलब बा अइसन मानसिकता से संपन्न व्यक्ति के अपना परान आ दोसरा के परान में अन्तर नइखे करत। ओकरा सगरों परान बल्कि सगरो अस्तित्व, अपने परान के समान प्यार महशूस होत होखे। उ अइसन कवनो बात नइखे सोचत, ना बोलता आ ना करता जइसन उ दोसरा से आपना प्रति चाहता। जइसे हम चाहतानीं कि दोसरा केहू हमरा से झूठ मत बोले, तब साधू आदमी दोसरो से खुद मत बोले, तब साधू आदमी दोसरो से खुद ही झूठ ना बोली। अर्थात साधू आदमी के जिनगी में कवनों पाखंड भा आडम्बर, अभिनय ना होई। कथनी करनी एके होई। उ बोलबे करी एसे काहें कि उ ओकरा के कइल चाहता। बोल के फेरू ओके पूरा ना कइल आ आपना बचाव खातिर कैफियत दिहल ओकरा मंजूर नइखे। उ अपनी वाणी के व्यवहार में खरा उतरे के एकमात्र अभिलाषी होई।

साधू केहू हो सकेला। सन्यासी भी अउर गृहस्थ भी। एकर संबंध सिर्फ मात्र विशुद्ध पवित्र मानसिकता आ आचरण से ही बा। आचरण से ही साधू के पहिचान होला। वेशभूषा, कपड़ा पहनावा भा बड़ा–बड़ा दाढ़ी भा केश वाला छवि से नाहीं। अइसन श्री श्री आनन्दमूर्ति जी के विचार ह। उ साधू चरित्र व्यक्ति खातिर एगो नया शब्द भी गढ़ले बाड़न–सदविप्र। सद्विप्र भावी समाज के नींव भी बाड़न आ मुखिया भी। सद्विप्र भा सद्विप्रन के अविर्भाव आज दुखी पीड़ित जनता के सर्वोपरि आवश्यकता अउर मांग बा। हमनिके ए मांग के पूरा करेके ना चाहीं? का सदविप्र बनके हमनिके सभ्यता के गहरात संकट से उबारे के ना चाहीं?

(लेखक भक्त समाज अउर अंग्रेजी प्राउट के सम्पादक हउअन)

राउर मिलल पाती

अलहदा मिजाज के अखबार है भोजपुरिया अमन

लखनऊ से प्रकाशित साप्ताहिक भोजपुरिया अमन के पहले वर्ष का 36वाँ अंक रेलवे स्टेशन से मिला। कहने को साप्ताहिक लेकिन सम्पूर्ण संभावनओं से भरा पूरा अखबार जिसमें पतनोन्मुख पत्रकारिता के मूल्यों की प्रतिष्ठा हैं वहीं भाषा–संस्कृति और समाज को बचा लेने का जोखिम भरा जीवट। आज जहाँ शौकिया अखबार निकालेन का चलन जैसा हो गया है, वहां भोजपुरिया अमन जमीनों मुद्दों और इन्सानी सरोकारों की आवाज बनता हुआ एक प्रतिबद्ध साप्ताहिक बन पड़ा है। सबसे अहम बात यह कि अखबार विधायी सकारात्मक पत्रकारिता का अगुआ बनता दिख रहा है, जिसमें मुख्यपृष्ठ पूरी तरह से सकारात्मक सोच की खबरों का आइना है, वहीं सम्पादकीय तुच्छ मुद्दो और मुल्यों की भर्त्सना करता हुआ शंखनाद।

12 पृष्ठों के कलेवर में कुशल और सजग सम्पादक ने सभी कुछ संजो लेने का सार्थक और काबिले तारीफ प्रयास किया है। संस्कृति, शिक्षा, समाज, स्वास्थ्य, कृषि, खेल, राजनीति आदि आयामों की खबरों का प्ररेणास्पद अन्दाज में पेश किया है ताकि पाठक खबरों के साथ दिनभर सार्थक सोच में मशगूल रहे और खुद के साथ समाज को कुछ सार्थक योगदान भी दे सके।

यह काम अमन उस समय कर रहा है जबकि हर अखबार चोरी, डकैती, बलात्कार, भ्रष्टाचार और खूनी खबरों से अपने मुख पृष्ठ रंग रहे हो। वैसे में यह साप्ताहिक अंधेरों को ललकारता हुआ छोटा सा ही पर बनकर सीने ताने खड़ा पत्रकारिता के सुखद–सार्थक भविष्य का आगाज दे रहा है।

–वी0पी0 सविता, साहित्यकार, भरतपुर, राजस्थान

लोकभाषा भोजपुरी के संवैधानिक दरजा समय के मांग

अपूर्व नारायण तिवारी
(बनारसी बाबू)

हाले में मुंबई उच्च न्यायालय द्वारा संघ लोक सेवा आयोग के ई निरदेस दिहल गइल कि सभे मान्यता प्राप्त भाषावन में उम्मीदवारन के साक्षात्मकार लेवे के उ व्यवस्था करे। एकरा अनुपालन में आयोग द्वारा ई हलफनामा दियाइल कि सिविल सर्विसेज परीक्षा में उम्मीदवार आठवीं अनुसूची के कउनो भी मान्यता प्राप्त भारतीय भाषावन में साक्षात्कार दे सकेला। ई बहुते खुशी क बात हो। एहसे भारतीय भाषावन के उत्तरोत्तर विकास होई। आपन मातृ भाषा में साक्षात्कार देवे में उम्मीदवार के भी सहजता आ सहुलियत रही। बाकिर रही परिपार्टी में जब भोजपुरी भाषी समाज पर नजर जावेला। त करजेवा मुहँ में आवेला। हिन्दी बाद देस क दुसर सबसे ज्यादा, 25 करोड़ लोगन के, बोलल जावे वाली भाषा भोजपुरी आजु तक संवैधानिक दरजा नाहि पवले बिया। नियमानुसार 8वीं अनुसूची का 22 मान्य भाषावन आ अंगरेजी भाषी मनइ लिखित परीक्षा आ साक्षात्कार आपन मातृ–भाषी में नाहि दे सकेला। ई हमहनी के बिडंबना बा।

नेपाल आ मारीसस में भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता मिलल हौ। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका (यूएसए) में सेना क प्रवेश परीक्षा में 14 अधिकृत मान्य भाषावन में भोजपुरी के भी स्थान हो।बकिया आपन देस में ई कउनों राज्यों के सह राजभाषा क भी दजा नाहि पइले हौ। जबकि तकरीबन दस करोड़ भोजपुरी भाषी मनई उत्तर प्रदेश में रहेलन आ बिहार में एकरा बोले बालन क आबादी 3.5 करोड़ बिया। दिल्ली राज्य क एक चौथाई आबादी 45 लाख भोजपुरी भाषी हउअन। राजनीति क चकरधिन्नी आ दलदल में फसल भोजपुरी क एही बिडम्बना रहल हो।

विश्व (संसार) में पचास से जियादा देसवन में भोजपुरी तकरीबन 2 करोड़ पखासी भारतीय दुआरा बोलल जावेला। ओहिदंजा भोजपुरी, पखासी लोगन के बीचे अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क बोली क भारतीय भाखा (भाषा) बन गयल बिया। बिदेसन में भोजपुरी के धरम करम संस्कृति के भारतीय भाषा रूप में जानल जाला।

पांच हजार बरिस से भी पुरान भोजपुरी भाशा 150 बरिस पहिले तक पुरबिया बोली भाखा रूप में जानल जात रहल। कबीर दास बोलले बाटन "बोली हमार पूरबी, बुझियहं नाहि कोई, बोली हमार अेहि बूझी, जे धुर पुरुब के होई।" पूरबिया बोली के भोजपुरी नाम अंगरेज विद्वान जार्ज अब्राहम ग्रियर्न्सन दुआरा दिहल गयल बा। ग्रियर्सन के मोताबिक भोजपुरी एगो बरियार जाति के व्यवहारिक बोले जावे वालीभाषा हो। कालान्तर में पूरबी भाषा भोजपुरी नाम से प्रचलित हो गइल। एकर मूल उत्पत्ति जनम काशी में ही भयलरहल, ओहिंजा से ई सगरों फइलल आ कइगो उपबोलियन रूप में फलल फूलल जेह में काशिका, मल्लिका, बल्लिका, डुमरावीं, चम्पारनी, गोन्डई आ ठेठ परमुख बाटन। बृहत्तर भोजपुरी भाषा में अवधी, ब्रज, बुदेंली आ राजस्थानी बोली। भी शामिल बिया। ई त सनातन सच बिया, बाकिर आपन देस में भाषावन के भी इतिहास के तोड़ मरोड़ कर गलत आ विकृत ढंग से साहित्य में देहल गयल बिया। कब्बो काशी राज्य में आरा, बक्सर, भभुआ, सासाराम, डुमरांव, भोजपुर आ छपरा तक के क्षेत्र रहल। काशी त हजारन बरिस से आक्रमण कारियन क हमला झेलत–झेलत बहुभाषी नगरी बन गयल। बकिया ओकरा दूर के इलाकन में पूरान जनभाषा पूरबी खुभे फलल फूलल आ विचक परंपरा से एगो पीढ़ी से दूसरकी पीढ़ी तक जावे लागल, जो आजु तक काय बरकरार है। भोजपुरी भाशा आ एकरा लिपियन क जनम आ विकास काशी (बनारस) में ही भयल रहल। ई त एगो मिथक हौ कि एकरा सम्बन्ध राजा भोज आ भोजपुर से बिया। जबकि जब पूरबिया भाषा रूप में 5 हजार बरिस से पहिले काशी नगरी में एकरा लोकभाषा (जन भाखा) रूप में जनम भयल रहल, तब नाहि भोजपुर रहल आ नाहि राजा भोज। भोजपुरी के कइगो विद्वान दुआरा एकरो जनम सातवीं से आठवीं सताब्दी में बतावल आ मानल गयल हौ। जे सरासर गलत आ मिथ्या हौ। जब एकरा प्रामाणिक इतिहास एही काशी (बनारस) में 2500 बरिस पुरान मउजुद हौ। त् ई कइसे महज सातवें सताब्दी में उत्पन्न होई? एही अनर्थ आ गलत प्रचार (परचार) से एकरा बहुते अहित भयल बिया। ई त् आदि भाषा (भाखा) संस्कृत के बाद आम लोगन के बीच बोले जावे वाली दुसरकी सबसे पुरातन भाखा (भाषा) रहल हौ। एकरा छ से जियादा। बेसी लिपि रहल। ब्राह्मी लिपि, खरोष्टी लिपि के अलावा पूरबिया बोली (भोजपुरी) श्री हर्ष लिपि, कुटिला लिपि, कैथी लिपि, नस्तालिक लिपि आ देवनागरी लिपि में ई लिखल बोलल जावेला। परवासी भारतीयत त रोमन लिपि में भोजपुरी के खुभे इस्तेमाल करत हउअन। आदिनाथ, राजा भरथरी, गोरखनाथ, बौद्ध साहित्य, कबीरदास, रैदास, दरियादास, तुलसीदास, धरनीदास से लेकर भिखारी ठाकुर, तेग अली तेग, महेन्दर मसिर, धरीक्षण मिसिर, रामजियावन बावला आदि भोजपुरी के सिद्ध रचनाकार मानल जावेलन। आल्हा में, लेरिकायन में भोजपुरी के बानगी नजर आवेला एहमें व्यापक शोध के जरूरत हौ।

भोजपुरी के सबसे पहिले संविधान के अठवीं सूची में शामिल करें क मांग चउथा लोकसभा में सन 1969 में उठल रहल फिर सन 1971 में संसद एकरा उठावल गयल। सन 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011 आ 2012 में भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करें के लगातार मांग संसद में उठल। 2006 में तत्कालीन गृह राज्यमंत्री श्री प्रकाश जायसवाल कहलन कि सरकार अठवीं सूची में शामिल करे पे विचार करत बिया। एहसे पहिले पूर्व गृहमंत्री शिवराज पाटिल सदन के भरोसा देहले रहलन कि सरकार उचित कार्यवाही करी। सन् 2004 में सीताराम महापात्रा कमेठी क रिपोर्ट में एकरा अठवीं अनुसूची में शामिल करे के सुझाव दियाइल रहल। सन 2006 में योगी आदित्यनाथ और से नियम 377 (377) के तहत भोजपुरी विषय के उठावल गयल रहल। 30 अगस्त 2010 के एकरा अठवीं अनुसूची में शामिल करे क मुद्दा सदन में उठाये पे तत्कालिन गृहराज्यमंत्री अजय माकन कहलन कि सरकार विचार करत हौ, बाकिर कउनो समय सीमा नही निरधारित करल जा सकेला। तब वित्तमंत्री प्रणव मुखर्जी दादा बोललन कि एहके नियम 193 (193) के तहत उठावें के चाहीं 15वें (पन्द्ररवें) लोकसभा में बहुत से सांसद, जेहमें शत्रुघन सिन्हा, संजय निरूपम, नीरज शेखर, रघुवंश प्रसाद सिंह, जगदम्बिका पाल, योगदी आदित्यनाथ, ओम प्रकाश याद, योगेन्द्र झा, उमाशंकर सिंह आदि परमुख रहलन के ओर से कइगो नोटिस, प्रस्ताव, सुझाव आ तहरीर दियाइल। बाकिर सरकार विगत 4 दसकन से आश्वसन क लालीपाप देहले जात है। 17 (17)मई 2012 के संसद में मंत्री पी. चिदम्बरम के बोलत, 'हम रूउवा सभे के भावना समझ ऽतानी,'' नीक त लागत हौ, बकिया पिछले 43 बरिस से मिलत आश्वासन देख एहु लागत बिया कि कहीं ई फिरे बरगलावेके परयास त नइखे। फिरे ई मृग मरीचिका त् नाही हौ। संसद में गृहमंत्री पी.चिदम्बरम क घोसना कि ओनहे दुगो कमेटी क रिपोर्ट मिल गयल हौ आ अबके मानसून सत्र में भोजपुरी बिल विधेयक पेश करल जाई अउरी पारित कर दिहल जाई, बहुते उत्साहित करे वाला खबर बिया। ई 25 करोड़न भोजपुरियन क एगो जुग से पलल सपनवा पूरा होवे क आस हौ आ आने के साथे नैसर्गिक न्याय हौ। एकरा बेद सभै भोजपुरिया मनई, तमाम सांसद, राजनैतिक दल आ तमाम भोजपुरी संस्थावन के लोगन के प्रति आभार हौ। सभै साधूवाद, बधाई के हकदार बाड़न। आपन लिपी, आपन शब्द भंडार, आपन समृद्व साहित्य, आपन सर्वनाम, निजी क्रिया रूप, निजी कारक, उच्चारण रीति, मनसा ध्वन्यात्मक लय आ अनुमान सिद्ध ध्वन्यात्मक स्वर इत्यादि सभे मानकन से ई परिपूर्ण बिया। ई बहुत कम लोगन के पता हो कि ई शेरशाह सूरी के शासन में मुगलिया काल आ अंगरेजी शासन में न्यायालय आ सरकारी काम कारज का भाषा रहल। कैथी लिपि में सब कारज होत रहल। देवभाषा संस्कृत क सरलीकृत सरूप लोकभाशा भोजपुरी (पूरबी) रूप में आजु बहुते विस्तार पा गयल है।

(महासचिव विश्व भोजपुरी संघ)

भोजपुरी के वर्तमान विश्व में स्थिति

डॉ0 नाहिदा शाबा, शारदा यूनिवर्सिटी, नोएडा

नई दिल्ली। भोजपुरी एगो भाषा हू, जवन इंडो–आर्यन भाषा परिवार के अन्तर्गत आवेला अउर भारत के उत्तर –मध्य आ पूर्वी क्षेत्र में बोलल जाला (चंपारन, सरन, शहाबाद, छपरा, आरा आदि) बिहार, झारखंड के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र (पलामू, रॉची ादि) अउर उत्तर प्रदेश केपूर्वी क्षेत्र गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, आजमगढ़ के पश्चिमी भाग में विशेष रूप से गाजीपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, बलिया आदि)।

इ एगो भाशा ह जवन खाली भारते में ना बोलल जाला बाकिर व्यापक रूप से भारत के बाहरो बोलल जाला। भोजपुरी के फिजी, त्रिनिदाद, गुयाना, टोबैगो, मारीशस, सिंगापुर, सूरीनाम, युगांडा, नेपाल, ब्राजील जइसन सोलह देश में आपन आधार बा। भारत के बाहर छः मिलियन भोजपुरी बोले वाला लोग बाड़न।

2001 के जनगणना के मोताबिक भोजपुरी के लगभग 40 लाख बोले वाला लोगन के सूची दिहल गइल बा कि दुनिया में कुल भोजुपुरी वक्ता 90 लाख के आसपास बाड़न। इ बहुत दुख के बात बा कि एह तरह से एग्रो जीवंत भाषा के अहियों भारत के संविधान के अठवीं अनुसूची से मान्यता पावला खातिर कोशिक करे के पडत्रता।

आजादी के बाद जब इ स्वीकार क लिहज गइल कि विशाला भाषा विविधता के साथ एगो राष्ट्र भाषा (हिन्दी) के द्वारा चिंत्रित नइखे कइल जा सकत त भारत के बहुभाषी लोकाचार के बनावले रखला खातिर संविधान में चौदह गो भाषा के जगह दिहल गइल। चौदह गो भाषा में असमिता, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम मराठी, उड़िया पंजाबी, संस्कृत तमिल, तेलगू, आ उर्दू रहल। बाद में सिंधी 1967 में 21वॉ संशोधन के माध्यम से जोड़ल गइल। डोगरी संथाली, बोडो 92वॉ संशोधन के माध्यम से आठवीं अनुसूची में जगह मिलल।

अब एकर संख्या 22ले पहुंच गइल बा। अनुसूचित भाशा के रूप में एह भाषा के चमन खातिर दृढ़ मानदंड ना रहल। मौजूदा मानदंड जवना पर एह भाषा के मिल गइल रहित उ ह साहित्यिक परम्परा, बोले बालन के बड़हन संख्या, नवकागठित राज्यन में अधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त कई बरिस से भोजपुरी के अठवीं अनूसूची में शामिल कइला के मांग संसद में मेज पर पड़ल बा बाकिर मान्यता ना मिलल।

सवाल उठऽता कि जहॉ भोजपुरी साहित्य इतिहास के सम्बन्ध में एह मानदंडन पर खरा उतरता उहॉ कई गो बात काम कर रहल बा जइसे कबीर के निर्गुण काव्य, रामदत्ता शुक्ला, राम गरीब चौबे (जंगल में मंगल नगरी विलाप) आदि एकरा अलखे डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद लाल बहादुर शास्त्री, चन्द्रशेखर, जहससन कई गो प्रख्यात हस्ती भोजपुरी समुदाय के बाड़न, भोजपुरी अनुसूची में शामिल होखला के लगभग सगरो मानदंड पूरा करता बाकिर अनुसूची में मान्यता नइखे मिलत। जबकि मैथिली बोल वालन के कम संख्या – 1766 597 के बावजूद अनूसूची में शामिल बा।

भोजपुरी बहुते तेजी से चाहे उ प्रिंट मीडिया के क्षेत्र, इलेक्ट्रानिक मीडिया अध्ययन शास्त्र आदि में विकसित कर रहल बा। अपना पहचान के डगर में सबसे बड़हन बाधा हिन्दी जवना के अक्सर मैथिली, भोजपुरी, मगही आदि के बहिन भाषा के रूप में संदर्भित कइल जाला, हिन्दी लगभग 49 बेलियन खातिर एगो कवर शब्द ह। हिन्दी के बढ़ावा देवे खातिर भाषा आपन पहचान त्याग कर रहल बा, हिन्दी के भारत के राष्ट्रीय भाषा के दर्जा ना मिलल, काहें कि खातिर 39 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलेला।

मैथिली के पहिलहि से एगो अलग दर्जा मिलल बा अउर भोजपुरी जवन कि हिन्दी के अन्तर्गत वर्गीकृत बा, मान्यता प्राप्त कइले बा त इ हिन्दी खातिर आपन बहुमत साबित कइला खातिर मुश्किल हो जाई, फिलहाल भोजपुरी भाषा के एगो सामर्थवान प्रतिनिधि के जरूरत बा जे संसद में एह भाषा के दृढ़ता से बचाव कर सके। एकरा अलावा भोजपुरी वक्ता लोगन के बीच आत्मीयता खातिर एक होखे के जरूरत बा। अउर उनके आपना मातृभाषा खातिर आपन वफादारी देखावे के चाहीं।

रामचन्दर शुक्ल जी इतिहास में कबीर, गोरखनाथ आ संत रैदास को महत्व न देहलन

भोजपुरी अध्ययन केन्द्र बीएचयू के निदेशक प्रा0 सदानन्द शाही से भोजपुरिया अमन के सम्पादक डॉ0 जनार्दन सिंह से लमहर बातचीत के एगो छोच्हन अंश –

राउर जनम कहां, कब भइल रहे आ प्राथमिक शिक्षा से लेके अन्तिम शिक्षा कब पूरा भइल, बतावल जा?

हमार जनम कुशीनगर जिला के रामकेला के लगे सिंगहा गॉव में 7 अगस्त 1958 के भइल रहल, प्राइमरी से लेके हाईस्कूल तक गॉव में पढ़ाई कइनीं। इण्टर के पढ़ाई रामकोला इण्टर कालेज से पूरा भइल। स्नातक के पढ़ाई उदित नारायन कालेज पड़रौना से कइनीं। 1981 में उहवॉ छात्रसंघ के अध्यक्ष भी रहनीं। एम.ए. आ पीएचडी गोरखपुर विश्वविद्यालय से कइनी। 1990 से गोरखपुर विश्वविद्यालय में अध्यापन कइनी। आ सन् 2001 में बीएचयू में हिन्दी विभाग में आ गइनी।

रउआ समाज सेवा आ साहित्य के प्रेरणा कहां से मिलल?

हमार जनम किसान परिवार में भइल। हमरे मामाजी गोरखपुर विश्वविद्यालय में कमेस्ट्री के वैज्ञानिक शिक्षक प्रो0 रविन्द्र प्रताप राव जी रहलन। उ आस्ट्रेलिया, अमेरिका कई गो देश में भी गइलन। 42 बरिस के अवस्था में बेल्जियम में उनके मौत हो गइल। उन्हीं के जिनगी से विशेष रूप से हमरा प्रेरणा मिलल। हमरा बाबा के पिताजी के भी हमरी पढ़ाई पर जोर रहल।

हमरा परिवार के माहौल धार्मिक रहल बाकिर धरम के कर्म काण्ड के प्रति कबो हमरा। श्रद्धा न हो पावल। युवावस्था में ही ओकरा प्रति विद्रोह के भावना रहल। जब हम पढ़त रहनीं त दु गो घटना एक साथे घटल।

एक त मुक्तिबोध कविता पढ़ला के बाद एगो बड़हन विक्षोभ मन में पैदा हो गइल। तब ओह कविता के असर से वामपंथी विचारधारा के आकर्षण हमरे मन में पैदा हो गइल। दिशा छात्र संगठन से हम अध्यक्ष के चुनाव लड़ल रहनीं। गोरखपुर विश्वविद्यालय में 5–6 साल संगठन के काम कइनीं। ओहमें जवन सपना समाज बदले के रहल, उ बहुते प्रभावित कइले रहल।

प्रेमचन्द्र साहित्य संस्थान 1996 में गोरखपुर से हो बनल रहल। ओकरा माध्यम से एगो साखीनामा के पत्रिका भी छपे। हमरा विचार से समझ में आइल कि एगो अइसन परम्परा हमरा समाज में रहल बा। उ परम्परा के प्रतिरोध करे वाला परम्परा रहल।

अच्छा इ बताईं कि साहित्य–संस्कृति के क्षेत्र में रउआ कवन–2 काम कइले बानीं?

साहित्य–संस्कृति के मार्चो पर जवन काम कइनीं ओह दरम्यान इ समझ में आइल कि बाहर से दबाव बनवला से बदलाव ना आई। जवन परम्परा के भीतर आलोचना प्रतिरोध के स्वर बा ओकरा के मानके विरोध कइल जाला। जवन वर्ण व्यवस्था बनल बा ओही में भेदभाव बा। दहेज के खिलाफ हाई स्कूल में संकल्प लेहनी कि हम बिना दहेज के शादी कइनीं। अन्तजातीय विवाह के मौका आइल ओकर प्रश्न

देहनी।

वर्ण व्यवस्था भीतर घुस के मुक्ति आन्दोलन, बुद्ध धर्म, मार्क्सवादी आन्दोलन के भी चार गइलस। वैचारिक रूप से कबीरका प्रेमचन्द्र जी के परम्परा पर हम काम कइनीं। 2003 में कबीर पर काम करे खातिर जर्मनी गइल रहनीं

भोजपुरी अध्ययन केन्द्र बी.एच.यू. में स्थापना कबर्से भइल? एकरा बोर में बताईं?

विश्व भोजपुरी सम्मेलन 2007 में बीएचयू के तत्कालीन कुलपति पंजाब सिंह जी भोजपुरी अध्ययन केन्द्र के घोषणा कइलन। डी0पी0 सिंह कुलाधिपति के हाथ से 26 जून 2009 के स्थापना भइल आ बनल।

भोजपुरी के विकास के बारे में बताईं?

भोजपुरी के विकास काहे ना भइल। अवधी के विकास तुलसीदास में रामभक्ति के सहारा मिलल। भोजपुरी के सहारा रामदस, कबीरदास, गोरखनाथ आदि लोगन से मिलल। जवना के इ लोग हकदार रहल, एसे एह लोगन के उ सम्मान ना मिलल। एसे कि ब्रह्मवाद के लोग मान पोषक ना रहल।

रामचन्द्र शुक्ल जी इतिहास में कबीर, गोरखनाथ आ संत रैदास के महत्व ना दिहलन। एसे महत्व ना मिलल। जबकि परम्परा के विरोध के आवाज भोजपुरी उठवलस।

राउर प्रिय भोजन का ह, बताईं?

हमार प्रिय भोजन कढ़ी आ भात ह। दोसर आलू के चोखा–रोटी आ बाटी–चोखा रहर के दाल, रोटी–भात पसन्द करीले।

भोजपुरी भाषा के संविधान के अठवीं अनुसूची में शामिल कइला के बारे में बताईं?

इ त राजनीतिक मसला ह। इ जवन समय बा भोजपुरी खातिर भाग–दौड़ के नजरिया से बहुत बढ़िया समय बा। एह भाषा के मान्यता भोजपुरी भाषी समाज के मिले वाला बा, आहट हो रहल बा।

अमेरिका के कवि माक्टवेन लिखले रहले कि ''भगवान पहिले मॉरीशस बनवले आ ओकरे सकल पर स्वर्ग बनवले।''

मारीशस के भोजपुरिया लोग बनावल। जब लोग मारीशस गइल त कई जाति के रहे। सभे जाके उहां मिल गइल, अगर रउआ चाहतानी जे भोजपुरी भाषा के विकास होखे तऽ भोजपुरिया लोग मारीशस, हॉलैण्ड, सूरीनाम आ फीजी बना सकता त आपन घर ना बनाई?

इहावा ढपोरशंखी, करम काण्ड, ढोंग, अंधविश्वास के लोग बढ़ावा देके लोग बांट रहल बा। एह भाषा के जवन संभावना बा तवन साने नइखे आइल। कवनों भाषा समाज के विकास पिछे ना देखेला, आगे देखेला। भोजपुरी अध्ययन केन्द्र एह क्षेत्र में काम कर रहल बा।

भोजपुरी अध्ययन केन्द्र के बारे में बताईं?

कृषि, कला, विज्ञान सगरों के अध्ययन करेके बा। अध्ययन क के इ देखे के परी की पुरखन के भांति खुरहुरी दवाई केतना उपयोगी बाड़ीसन। इ सब विचार क के काम कइल जाना।

भोजपुरी केन्द्र में हमार जवन काम बा भोजपुरी में ट्रेंड लोग चाहीं। शब्द कोष, साहित्य के भण्डार चाहीं भोजपुरी आज ना त बिहान अठवीं अनुसूची में अइबे करी। अइला के बाद भी जवन जरूरत होई, ओकर तइयारी करतानी जा।

एह समाज में गरीबी, बेरोजगारी जियादेबा हमन के अइसन विचार करतानी जा कि भोजपुरिहा लोगन के रोजगार कइसे मिली। कवन–2 अइसन चीज बा जवना से रोजगार के सृजन कइल जा सकता जइसे कोहार, लोहार, बढ़ई, मेहरारून के बनावल कला किर्ति आदि के बढ़ावा देके बाहर के भोजपुरिया देशन में व्यापार बढ़ावल जाई। एहसे एहजा के कलाकृति जिन्दा हो जाई। लोगन के रोजगार मिली। अध्ययन केन्द्र में हमन के इ प्रस्ताव करतानी जा।

मैथिली के अपनहीं लोगन के संरक्षण नइखे

—श्रीश चौधरी, प्रोफेसयर मनविकी आ समाज विज्ञान विभाग आईआईटी मद्रास

जनगणना के नवका ऑकड़ा अबही नइखे मिल पावल बाकिर बरिस 2001 के जनगणना के मोताबिक भारत मेंएक करोड़ 21 लाख से अधिक मैथिलीभाषी बाड़न। मैथिली भाषा के दोसर विद्वान एह आंकड़ा से सहमत नइखन। एही तरह से मैथिली भाषी क्षेत्र के ले के भी असहमति बा। अनेक विद्वान मैथिलीभाषी क्षेत्र में पूर्णिमा जिला से लेके बेतिया (पश्चिम चम्पारण) ले आ मधुबनी से ले के भागलपुर ले गिनती करेलन। लेकिन दोसर–दोसर कुछ विद्वान एहमेंसे अंगिका आ बज्जिका भाषी क्षेत्र अर्थात समस्तीपुर के दक्षिणी हिस्सा, मुंगेर आ भागलपुर के भी मैथिली भाषी क्षेत्र से बाहर मानतारन। एह तरह के मनभेद के भाषा विज्ञान के आधार पर सुलझावल नइखे जा सकत। एकरा के सुलझावल हमरा जरूरी भी नइखे लागत लेकिन इ सांच बा कि बिहार, झारखंड आ दिल्ली में भारी संख्या में मैथिली भाषी बाड़न।

जनगणना के ऑकड़ा के अनुसार इ पता चलता कि प्रवास के कारण कुछ ना कुछ मैथिलीभाषी भारत के सगरों राज्य में बा, बाकिर जवन संख्या देखावल गइल बा, उ वास्तव में अनुभव से बहुते कम लागता। सच्चाई जवन बा, एकरा से एगो बात सिद्ध होता कि भारी संख्या में प्रवासी रहला के बावजूद मैथिलीभाषी लोग आपना भाषा के त्याग नइखे कइले। मातृभाषा उनके जिनगी आ व्यवहार में झलकेला। एसे भाषा के भविष्य के अन्दाज लागता।

बाकिर जियत आ मरल दुनु भाषा के इतिहास बतावत कि जवना भाषा मेंप्रचलित तकनीकी माध्यम से काम होता, ओकर तरक्की होला, लेकिन जवन भाषा एहमें पिछड़ जाला। उ अविकसितआ संकटापन्न हो जाला। जइसे–जवना भाषा मेंकिताब, पत्र–पत्रिका, अखबार, सिनेमा, टेलीविजन, इंटरनेट नइखे, ओकर व्यवहार कम होला। कालक्रम मेंओकर व्यवहार करेवाला के संख्या भी कम होता जाता। इ हो हो सकेला कि दु सौ बरिस बाद ओह भाषा के बोले वाला एको आदमी ना रहि जाई। भारत मेंआदिवासी भाषा के स्थिति अइसने बा। आदिवासी भाशा में किताब, पत्र–पत्रिका, सिनेमा टेलीविजन आदि के अभाव बा। अइसन हालात मेंमैथिली भाषा के हालत भी चिंताजनक लागता।

हिन्दी बांग्ला, मराठी, तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी आदि के छोड़ दिहल जा, तबो असमिया, नेपाली ओड़िया, कश्मीर, गुजराती आदि के तुलना में मैथिली में बहुत कम किताब, पत्र–पत्रिका छपेला, जवन छपबा करेला उ बहुत कमे संख्या मेंबेचाला। अब ले मैथिली मेंगॉव–गॉव मेंबिके वाला अखबार नइखे। अबले मैथिली में20 गो फिलिम भी नइखे बन पावल। अब ले मात्र एगो टीवी चैनल सौभाग्य मिथिला' पर मैथिली उपलब्ध बा। रेडियों पर मैथिली कुछ अधिक उपलब्ध बा। जबकि इंटरनेट पर बहुत कम कथा–कविता आत्मकथा संस्मरण, छोड़ के मैथिली में विज्ञान, इतिहास आदि पुस्तकन के भारी कमी बा। हालांकि एह तरह के किताबन के भारत के अन्य बहुते भाशा में भी कमी बा। लेकिन मैथिली में त एह तरह के किताबे नइखे। हाल ही में दरभंगा स्थित एमएलएसएम काले के एग्रो प्रोफेसर रसायन शास्त्र के किताब लिखले बाड़न :– "अकार्बनिक गुणात्मक विश्लेषण" लेखक के नाव ह डॉ0 प्रेम मोहन मिश्र, नंदिनी प्रकाशन दरियागंज, नयी दिल्ली। एह किताब के क से कम 30 हजार कापी बेचा जाये के चाहीं, बाकिर 300 कापी भी बेचाइल मुश्किल बा। पटना जंकशन पर एगो किताब के दोकान मेंखाली मैथिली के किताब बा, सात लाख रूपया से अधिक के किताब धइल बा बाकिरकेतना हफ्ता बीत जाला, जब कबो एगो किताब बेचा जाला जबकि मैथिलीभाषी क्षेत्र के करीब 40 गो ट्रेन रोजाना पटना से होके गुजेरलीस।

टी.बी., सिनेमा, पत्र–पत्रिका, पुस्तक आदि व्यापारी वर्ग के लोगन के समर्थन आ सहयोग से चलेला उनके विज्ञापन से ही टी.वी. चलेला, सिनेमा बनेला उहे लोग अखबार आ किताब छापेला बेचेला, कवनों भाषा के इतिहास देख ली, यदि व्यापारी वर्ग के लोग तरक्की में नइखे, त उहा साहित्य आ भाषा के भी तरक्की ना लउकी। दरिद्र समाज में समृद्ध भाषा–साहित्य ना होला। मिथिलांचल के छोट बड़ कइगो शहरन में समृद्ध आ सक्रिय व्यापारी रहेलन। भागलपुर, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, प्रयरी, दरभंगा, कमतौल, मधुबनी, सकरी, निर्मली, घोघरडीहा, जयनगर, समस्तीपुर, दलसिंह सराय, कटिहार, फारबिजगंज आदि जगह समृद्ध व्यापरिक स्थल मानल जात रहल। खाली दरभंगा जिला मेंसकरी, लोहट, रैयाम आदि कई गो चीनी मिल रहल बाकिर इ सगरोंसरकार आ जनता दुनु के मिलित अत्याचार से बन हो गइल। किसान लोग से आज ऊंच ले लिहज जा आ दु बरिस बाद ओकर पइसा दिहल जा। उ हो बहुत दौड़–भाग के बाद, त कवन किसान ऊंख बोइहें।

एही तरह साधारण कपड़ा के दोकानदार से दुर्गापूजा के नाम पर लाख रूपया चंदा मांगल जा त चन्दा दिहला में देरी चाहे दिक्कत हो जाव त ओकरा के मार दिहल जाव, त व्यापारी वर्ग आपना क्षेत्र में काहें रही? जवन व्यापारी वर्ग अत्याचार सहत रही आ ओकरा पर अत्याचार भइला पर चुप बइठल रही त रउरी इहां से लक्ष्मी आ सरस्वती दुनु भाग जइहें। यदि रउआ शक्तिहीन प्राणहीन भूत जइसन श्मशानवासी बनल रहीं त उहॉ भूत–पिचास ही पनकिहें। भाषा–साहित्य–समाज सबे उत्थान खातिर धरम–कानून के राज जरूरी बा। अखबार, टेलीविजन सगरोंविज्ञापन से चलेला आ विज्ञापन व्यापारी वर्ग देला। कवनोंभाषा आ साहित्य के इतिहास देख लीं त एकरा उदाहरण मिली चाहें उ अंग्रेजी होखे भा तमिल, तेलगू।

व्यापार के उत्थान आ समाज–साहित्य, भाषा के उत्थान एक दोसरा से जुडत्रल बा। मिथिलांचल मेंफेरू व्यापार के प्रोत्साहन मिले आ व्यापारी लोगन के आदर के सस्कृति वापस आवे, त भाषा आ साहित्य के विकास सम्भव बा। समाज के समग्र विकास भइला पर हो भाषा आ साहित्य के विकास हो सकेला। व्यापार बढ़खे खातिर सड़क बैंक, आ व्यवस्था चाहीं। चौबीस घंटा टी.वी. खातिर 24 घंटा बिजली चाहीं। मैथिलीभाषी के संख्या के सही आकलन गणना होखे। एकरा खातिर मैथिली के व्यवहार के अवसर आ प्रेरणा में वृद्धि जरूरी बा आ इ समाज के सर्वागीण विकास मात्र से ही सम्भव बा।

(प्रभात खबर से सभार भोजपुरी मेंअनुवाद)

दलित प्रतिभा के (भेदभाव) दलन

हर तरह के जातिगत भेदभाव हो रहल बा, देश के नामचीन सर्वोच्च शिक्षण संस्थानन में

मनीषा भल्ला

देश के सर्वोच्च शिक्षण संस्थान के कईगो मेधावी दलित–आदिवासी छात्रन के आत्महत्या के कारण इनकर जाति बा। उनकर यातना ओह दिने शुरू हो जाला, जवना दिन से उनके शिक्षण संस्थान में प्रवेश मिल जाला। आत्महत्या के दहलीज पर उनके पहुंचावल जाला अपमान, प्रताड़ना, जातिगत गाली, नजरअंदाजी। हाल ही में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में 3 मार्च के एमबीबीएस के 22 वर्षीय छात्र अनिल कुमार मीणा के आत्महत्या संस्थान में जातिगत भेदभाव के फेरू बेपर्दा क देहलस। एम्स में जातिगत उत्पीड़न देखे खातिर 12 सितम्बर 2006 के केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य आ परिवार कल्याण विभाग सुखदेव पोराट कमिटी के गठन कइलस। प्रबन्धन अगर कमिटी के सिफारिश लागू कइले रहित त अनिल आत्महत्या नाहीं करतन। फिलहाल त प्रबन्धन आनन–फानन में अनिल मीणा के आत्म हत्या के जांच अउर जातिगत उत्पीड़न के जायजा लेबे खातिर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर आ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष सुखदेव थोराट के अध्यक्षता में फेरू कमिटी के गठनक देहले बा।

प्रो0 थोराट कहेलन कि एह बेरी एम्स प्रबन्धन के रवैया पहिले के अपेक्षा सकारात्मक बा। सरकार आ एम्स प्रबन्धन के इ एहसास भइल बा कि उहाँ जातिगत भेदभाव बा। दुनु लोग चाहता कि एकरा ओर ध्यान दिहल जा। जवना में एम्स के संगठन आ प्रबन्धन दुनु सहयोग दे रहल बाड़न। प्रो0 थोराट के कहनाम बा कि जॉच के बाद जवन भी सिफारिश उ बतावस ओकरा के एम्स ही ना बल्कि स्वास्थ्य आ परिवार कल्याण के तहत आवे वाला तमाम मेडिकल शिखण संस्थानन में लागू कइल जाव।

देश के सर्वोच्च शिक्षण संस्थानन में दलित उत्पीड़न के खिलाफ आ दलित छात्रन खातिर सहायता व्यवस्था तइयार करे वाली संस्था इनसाइट फाउंडेशन के राष्ट्रीय समन्वयक अनूप कुमार कहेलन कि एम्स में दलित आ गैर दलित सबके कड़ा प्रतियोगिता प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कइला पर प्रवेश मिलेला।

आरक्षण के तहत दलित आदिवासी छात्रन के सिर्फ 5 फीसदी मिलेला। एह छूट से इ कइसे तय क लिहल जाला कि आरक्षण से आवे वाला छात्र नालायक बाड़न। अनूप जी बतावेलन कि हरकोर्ट बटलर टेक्नोलॉजी इंस्टीयूट कानपुर में इंजीनियरिंग के पढाई के दौरान उ देखलन कि पहिलहि दिन से आरक्षण से प्रवेश पावे वाला छात्रन के जाति के एहसास करावल जाला। पिछड़ल इलाका से महानगरन में अइला के कारण दलित–आदिवासी छात्रन के अलग सांस्कृतिक आ सामाजिक माहौल से सामना होला। उ सेंट स्टीफेंस के छात्रन के तरह अंग्रेजी दां ना होलन। अनूप सवाल करेलन कि कइसे मान लीं कि आरक्षण के तहत आइल छात्र सामान्य सीट के छात्र से कम लायक बाड़न बलूक उ त जियादा लायक बाड़न काहें कि अपना गरीबी, पिछड़ापन, स्कूली शिक्षा, घर में अशिक्षा आदि सगरों बाँधा के पार क के उ नामी– गिरामी शिक्षण संस्थान में प्रवेश पावेलन। संस्था के अध्ययन बतावेला कि आरक्षित सीट के छात्र के 'कोटा वाला' कहल जाला। पहिलहि दिन कहल जाला कि 'कोटा वाला छात्रन के खूबे मेहनत करेके होखी, काहें कि नम्बर मायावती ना दिहन। छात्र लोगन के हिम्मत टूटे लागेला, केहूं उनके सुने खातिर तइयार ना होला। अभिजातय वर्ग के छात्र उनके आपना में शामिल ना करेले। मुश्किल विषय अलग से समझवला में प्रोफेसर मदद ना करेले। संख्या में अनुसूचित जाति जनजाति के छात्र कम होलन। उनके जातिगत गंदा–गंदा गाली दिहल जाला। उ अपने आप में खो जालन कटे लागेलन, अवसाद (डिप्रेसन) के शिकार हो जालन, घरे वापस नइखन जा सकत काहें कि परिवार माने के तइयार नइखे कि दिल्ली में केहूं जातिपाति मानेला। घरवाला लोग भी इन्हीं के दोष देलन। एह छात्रन के सामने आत्म हत्या के सिवाय कवनो रास्ता ना होला। दलित बुद्धिजीवी नेता विमल थोराट भी कहेली कि आरक्षण के जरिए आवे वाला छात्र के कमजोर मानल जाला, उ बतावेली कि 1996–97 में एम्स के प्रवेश परीक्षा में पहिला, दोसरा आ तिसरा स्थान पर आवे वाला तीनू छात्र दलित–आदिवासी रहलन, जे सामान्य सीट पर प्रतियोगिता में बइठल रहलन। एह एइपर खूबे हो हल्ला भइल कि आरक्षण वाला आरक्षण में जास। थोराट बतावेली कि दलित आ गैर दलित छात्रन के बीच दूरी कम करे खातिर शिक्षण संस्थान के प्रबन्धन कुछ ना करेलन। उ कहेली कि दलित छात्रन के अनुसार कुद हास्टलन में उनके फ्लोर के 'शड्डू' कहल जाला। उनके सालाबा कार्यक्रम में शामिल ना कइल जाला। उनके कमरा बाहर से लॉक क दिहल जाला भा उहवा पेशाब के दिहल जाला, जातिगत गाली लिख दिहल जाला रैगिंग के नाम पर यौन उत्पीड़न के कई घटना सामने आइल बा।

ज्यादातर नामी शिक्षण संस्थान में जातिगत भेदभाव के जरि गहिर बा। जेएनयू के स्कूल आफ इंटरनेशनल स्टडीज के प्रो0 तुलसीराम बतावेलन कि सामाजिक विज्ञान में त कवनो दिक्कत ना आवेला लेकिन तकनीकी शिखा में दलित छात्रन के प्रति व्यवहार रोंगटा (रोंआ) खड़ा क देबे वाला बा। एकरा कारण उ बतावेलन कि दलितन के शिक्षा ग्रहण करे के इतिहास पूरान नइखे। गुरूकुल प्रणाली में शिखा लेबे देबे वाला ब्राहम्य रहलन। शिक्षा प्रणाली मुगलन के हाथ से आइल त मदरसा में मुसलमान, कश्मीरी पंडित आ कायस्थ लोग ज्ञान लिहल। ब्रिटीश काल में जो दलित लोगन के शिक्षा लेबे के मौका मिलल शुरू भइल। इहे करिया (काला) इतिहास आज इनके आड़े आ रहल बा। प्रो0 तुलसी के अनुसार दलितन के विकास में अंग्रेजी भाषा भी बाधा बा। उ कहेलन कि रूस, चीन, जर्मनी, पुर्तगाल, स्पेन सब जगह मातृभाषा में पढ़ाई होला आ एइमें एको देश पिछड़ा नइखे। प्रो0 तुलसी कहेलन कि बीतल साल में राजनीतिक पार्टी जातीय स्तम्भ के मजबूत कइले बा। (आउट लुक से साभार भोजपुरी अनुवाद)

हाइ कू

–गंगा प्रसाद 'अरूण', जमशेदपुर

बाबा हो बाबा।
आगा कुइयां।
कहवां जाई!।
दाढ़ी–तिलक।
बहुते फबे।
आन्ह असोता।
तरनाइल।
केकेर नांव घरीं।
बड़का त बड़का।
तनी मनी ना।
बिलरा बाघ।
ओक–बोक से।
जागी जनता।

का होइ काशी–काबा।
पिछवा पसरल।
सरग कि दोजख।
अजान आरती में।
कलूटा मन पर।
सब कुछ जायज।
रहलीं सुविधा में।
असली।
गदेल।
ई कुबेर के काका।
लोग कुल बनले।
इजय–बिजय में।
चली चहेते, लागी।

आदमी बनीं!
गहिरा खाई,
तनी बताई।
बा तनातनी!
दुधिया जामा,
बके सुदामा,
अब खखनीं।
केहुएना लउके,
सह पाके छउके
बहुत धनी!
बकरी–पाठी,
लउआ–लाठीं,
हड़कंपनी!

मगही विशेष

ठुँट्ठा पीपर

–चितरंजन चैनपुरा

बिक गेल बैला उखड़ गेल खुट्टा।
खड़ा दुआर पर पीपर अब ठुँट्ठा।।
इयाद हे कि मेला से गाय अब अनाय गेल।
सूपा में खियाबे ला जौ लेके माय गेल।
झारऽ हल पोंछी जब ठोकऽ हली पुट्ठा।। खड़ा...
दू छेनी बच्चा ला छूटऽ हल समुच्चा।
मुँह में दबा के ऊ मारऽ हल हुमुच्चा।
बछडु बन्हाऽ न हल घूमऽ हल छुट्टा। खड़ा...
छप्पर पर लउका आउ कोंहड़ा न फरऽ हे।
रात का? अब दिन में भी रहे में मन डरऽ हे।
होरहा हे आज कहाँ? गेल कहाँ भुट्टा? खड़ा...
साँझ के चुचुहिया जब चुह–चुह करऽ हे।
डरे डेरायल मन कुहु–कुहु करऽ हे।
शांत सब डोल जब साड़ी झुरमुट्टा। खड़ा....
घर दूरा गिर गेल खँढ़ी विरान हे।
मट्टी ला मचल अब गिधबामिसान हे।
खँडहर में खाड़ हँसइत देखऽ दँतटुट्टा। खड़ा ....
खेलइत बगइचा में लइका गिना हल।
धूरी में लेटल का कउनों चिन्हा हल?
छीन के सब खा हल एक दूसर के जुट्टा। खड़ा...
जगल हल से सुत गेल सुत्तल सब जाग गेल।
जेकरा देखऽ गाँव छोड़ शहर भाग गेल।
रह गेल कउन? खाली कान–कपरफुट्टा। खड़ा.....
कासी–करवट देके कइसहूँ आज पड़ल हे।
जाके पैकई में गरई जइसन गुडल हे।
रात दिन कान में काटइत हे चुट्टा। खड़ा.....
शहर में भी आके कहाँ आराम हे?
लुच्चा लफंगा से जीना हराम हे।
बड़–बड़ के बोली बंद कइले नन्हबुट्टा। खड़ा....
घर भरल रहऽ हल भुलायल हे आज कोना में।
मोटरी के बात का? अब हर चीज सोना में।
बँटऽ हल चीज कइसे भर–भर मुट्ठा। खड़ा.....
सबकुछ हे आज ऊहे घूमइत हमर आँख में।
वाण लगल जइसे उड़इत चिरई के पांख में।
खिसकल आधार कहाँ? हो गेली उट्ठा। खड़ा.....
चितचैन मिले न मन तो बेचैन हे।
हिरदा ऊ माने न देखइत जे नैन हे।
झूठे हे सच बनल सच्चे हे झुट्ठा। खड़ा....।।

''पत्रकारिता कोश'' के 12वॉ अंक लोकर्पित

डॉ0 आफताब आलम
सम्पादक, पत्रकारिता कोश

मीडिया के सम्पूर्ण जानकारी के प्रतीक हवे ''पत्रकारिता कोश'' –डॉ0 राजी तिवारी

मुंबई। भगवान विष्णु के 12वॉ अवतार रहलन श्रीरामजी। राशियन के संख्या 12गो होला, 12 महीना में ऋतु चक्र पूरा होला अउर इ 'पत्रकारिता कोश' के 12वॉ अंक ह, जवना में मीडिया जगत के सम्पूर्ण जानकारी भरल बा। उक्त उदगार मुंबई विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागध्यक्ष अउर गखारे इंस्टीयूट में पत्रकारिता विभाग के समन्वयक डॉ0 रामजी तिवारी व्यक्त कईलन। उ अथक सेवा संघ द्वारा घाटकोपकर (मुंबई) में आयोजित पत्रकारिता कोश–2012 के लोकार्पण समारोह में बोलत रहलन। उ आगे कहलन कि इ कोश भारतीय मीडिया के बारे में पूरा रचना आ जानकारी मुहैया कराके देश के जोड़े के काम कर रहल बाड़न, एकरा के निरन्तर जारी रखला के जरूरत बा। समारोह के अध्यक्ष आ दोपहर के सामना के कार्यकारी सम्पादक प्रेम शुक्लास जी कहलन कि 'पत्रकारिता कोश'' के प्रसिद्ध देश के गली–कुचा तक फइलल बा आ अब एकरा आवाज विदेश में भी पहुंचे लागल बा। इ कोश पहिलका अंक से तो के अब तक 12 बरिस में लगभग 600 फीसदी के बृद्धि देखवले बा जवना से मीडिया के लोकतांत्रिकरण के पता चलता। एह अवसर पर प्रसिद्ध भोजपुरी साहित्यकार डॉ0 आशा रानी लाल के भोजपुरी कथा संग्रह 'तिली' के दोसरका संस्करण के विमोचन भी भइल।

जे.पी. मूवमेंट के रणबांकुरन के मिलों स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के दर्जा

लोकतंत्र रक्षक घोषित क के उनके सम्मानित करे सरकार–रामदरश गुप्त

बसंत कुमार यादव बागी

भाटपार रानी (देवरिया)। पॉच जून 1974 के पटना के गांधी मैदान में लोकनायक जय प्रकाश नारायण जी सम्पूर्ण क्रांति के घोषणा ना कइलेरहतन त देश में 26 जून 1975के केन्द्र में सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार द्वारा आपतकाल ना भइल रहित। लोक नायक जी के घोषणा से पूरा बिहार के आन्दोलित छात्र–नव जवानन द्वारा केन्द्र सरकार के उखाड़ फेंके के संकल्प ले लिहल गइल। बिहार में उग्र हो गइल एह आन्दोलन के चिनगारी बिहार के सरहद स्थित भाटपार रानी रेलवे स्टेशन परिसर में आ गिरल। उ दिन रहल 2 अक्टूबर सन 1974, जवना दिन के इहां के नवजवान आ छात्र आपना मुंडी पर कफन बॉन्ह के 'करो या मरो' क नारा दे के आन्दोलन में कूछ पड़लन।

दुलारी देवी
पत्नी डॉ0 अक्षयवर

उक्त विचार सम्पूर्ण क्रांति परिषद भाटपार रानी के संयोजक आ वरिष्ठ पत्रकार रामदरश गुप्त अउर महामंत्री केशवकांत सिंह संगठन के कैम्प कार्यालय पर आयोजित एगो पत्रकार वार्ता के दौरान व्यक्त कइलें। इ रणबांकुरा लोग बतावल कि देखत–देखत में आन्दोलन उग्र रूप पकड़ लिहलस। स्थिति इहॉ तक पहुंच गइल कि पुलिस बल के अश्रु गैस के प्रयोग करेके पड़ल, एहुसे आन्दोलन में कवनों कमी ना आइल त पुलिस द्वारा फायरिंग शुरू क दिहल गइल। जवना में ग्राम–छपियां निवासी रविन्द्र नाथ प्रसाद के गोली लागल आ उ भाग खड़ा हो गइलन। कुछ पत्रकार लोगन पर भी समाचार संकलन करत में उनका पर डंडा बरसावल गइल बाकिर उ हिम्मत मा हरलन।

उक्त घटना के घटित भइला के बाद 3 अक्टूबर 1974 के पूर्व सांसद हरिकेवल प्रसाद के द्वारा बी0बी0सी0 लंदन से समाचार प्रसारण भइल कि 2 अक्टूबर सन् 1974 के आन्दोलन में 3 लोगन के मौत आ कई लोग घायल हो गइलन। देखते–देखत इ आन्दोलन उत्तर प्रदेश के कोना–कोना में फइले लागल। जगह–जगह लोगन के गिरफ्तारी भी शुरू हो गइल। सबसे पहिले भाटपार रानी के पत्रकार रामदरश गुप्ता के निरूद्ध कइल गइल, एकरा बाद केशवकान्त सिंह जे छात्र नेता रहल, डॉ0 दुर्गा प्रसाद कुशवाहा, शिवदेवी यादव, अनिल तिवारी, विश्वनाथ सिंह योगेन्द्र तिवारी के गिरफ्तारी हो गइल। इ क्रम जारी रहल। एही 26 जून 1975 के देश में सत्तारूढ़ इन्दिरा सरकार द्वारा आपात काल लगावे के घोषणा क दिहल गइल। जे0पी0 मूवमेंट के रणबांकुरे पहिले एल0एल0बी0 दोसरका साल के छात्र आ छात्र नेता जनार्दन सिंह भूमिगत रहिके बनारस, सीवान, गोरखपुर, नवलपरासी (नेपाल) देवरिया –गोपालगंज, आजमगढ़, गाजीपुर आ बलिया के प्रगतिशील भोजपुरी छात्र संघ आ दोसर छात्र नेतन के सम्पर्क में रहिके आन्दोलन के रूप रेखा बनावस। संयोजक रामदरश गुप्ता पत्रकार वर्ता के दौरान कहलन कि एह प्रकरण के प्रदेश में आरूढ़ सपा सरकार के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव जी आ सपा सुप्रिमों मा0 मुलायम सिंह 38 बरिस बितला के बाद संज्ञान लिहलें बाड़न उहॉ के बधाई के पात्र बानीं।

बन्द क दिहल गइलन बाद में उनके छोड़ दिहल गइल।

उनके जेल में प्रताड़ना दिहल गइल रहल लेकिन उ लोग आपना लक्ष्य से ना डिगल। आपात काल लागू भइला के बाद ही ग्राम भड़सर निवासी मार्क्सवादी नेता रामसागर तिवारी के गिरफ्तार क के मीसा में निरूद्ध क दिहल गइल। ग्राम–खामपार निवासी आनन्द मार्ग संगठन के सक्रिय सदस्य आ प्रगतिशील भोजपुरी समाज आ प्राउटिस्ट ब्लाक इंडिया के केन्द्रिय नेता डॉ0 अक्षयवर के डी0आई0आर0 36/43 में गिरफ्तार क के जेल में बन्द क दिहल गइल। उनका साथे भूमिगत रहि के ग्राम–मिश्रोली निवासी संत बिनोवा डिग्री कालेज देबरिया के

आज 2 अक्टूबर सन् 1974 के जे0पी0 मूवमेंट में सक्रिय भाग लिहले अउर जेल गइल लोगन के उमिर 60, 65, 70, 80, 85 बारिस के करीब पहुंच रहल बा। अइसन स्थिति में श्री गुप्त प्रदेश के मुख्य मंत्री माननीय अखिलेश यादव आ सपा सुप्रियों मा0 मुलायम जी से मांग करतारन कि अइसन रणबांकुरन के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के दर्जा दे के उनके सब तरह के सुविधा प्रदान क के सम्मान देबे के चाहीं। श्री गुप्त इ हो मांग सरकार से कइलन कि उनके लोकतंत्र रक्षक सेनानी घोषित क के सम्मानित करे के व्यवस्था कइल जाव।

रामजियावन दास 'बावला'

–अपूर्व नारायण तिवारी

जिनगी का अइसन कहानी रहलन बावला
जइसे बदरी में सपनवा भयल उदास
दुनिया का तमासा सगरों ऊ देखलन
मनई झझकेलन सुसुकेलन रोवेलन झुहूं निरास
दुःखन का परयाय बावला जस चन्दन
वेदना क जब आपन चक्षु खोलें
बनवा पहाड़े खेते सीवाने ऊ डोलें
गीत गावें सझई के मंगल वन्दन
खेते हरवी, गजरॅवा चरवाही घूमि घूमि के
महुआ चिरूऊजी चिलबिल अउदर झरबेरी उ बीनें
चानी क पानी में, दखे बूडल जलकूभी कमलिनी
धाने के केयारी आ बनवा, गीतन के उपजावें
घूमे बनवा मनवा क मसती में मातल
डाढि डाढि सुनावे, मानस पाठ भजन कीरतन
खल के ढिहल सुख के माने दुःख दसरन
निरासा के दुःख दरदिया, बावला सुख जाने आपन
आपन मसती में मातल गावत लुटावत जे सनेहिया
सझे केहु के लोग, बावला आपन पाहून बटेहिया
कहलन बनारसी बाबू! देवता भी भइलन बावला केरसिया
सरग के अरज पे बावला छोड़ देहलन देहिंया
नछत्तर बनके आसमान टिमटिमाट मुस्कियात हउअन बावला

बनवास से लौटल साहित्यिक परम्परा

एस0एन0 पाण्डेय

इलाहाबाद। चौदह बरिस के बनवास काटला के बाद हिन्दुस्तानी आकादमी के साहित्यिक परम्परा वापस लौट आइल बा। बरिस 1998 में प्रख्यात साहित्यकार नामवर सिंह के सम्मानित कइला के बाद बन्द हो गइल सम्मान के परम्परा के एकेडमी द्वारा शुरू होखे जा रहल बा। बरिस 1929 में मुंखी प्रेमचन्द्र के सम्मानित क के शुरू भइल सम्मान के इ सिलसिला नामवर के सम्मानित कइला के बाद रूप हो गइल रहे। साहित्य के विकास खातिर 1927 के स्थापित हिन्दुस्तानी एकेडमी अपना स्थापना काल से ही साहित्य संवर्द्धन खातिर प्रयासरत बा। एही प्रयास के क्रम में एकेडमी उत्कृष्ट कार्य करे वाला साहित्यकारन के एगो निश्चित धनराशि देके सम्मानित करे के परम्परा शुरू कइलस।

14 बरिस पहिले नामवर सिंह के आखिरी बार मिलल रहल सम्मान

बारिस 2012 के वार्षिक बजट में परम्परा के पुनः शुरू करे के योजना राज्य सरकार के लगे भेजल गइल बा। सूबा के नवका सरकार भी एह प्रस्ताव पर सकारात्मक पहल कइले बा।

एह परम्परा के तहत लगभग डेढ़ दर्जन साहित्यकार लोगन के सम्मानित कइल जा चुकल बा, जवना में प्रेमचन्द्र 1928–29, बाबू गुलाब राय 1929–30, जय शंकर प्रसाद 129–30, रामचन्द्र शुक्ल 1930–31, जैनेन्द्र कुमार 1931–32, मैथिलीशरण गुप्त 1932–33, भगवती चरण वर्मा 1959–60, लक्ष्मीकान्त वर्मा, 1996–97, अउर नामवर सिंह 1997–98 आदि मुख्य नाम शामिल बा। पुरस्कार परम्परा में पहिले 500 रूपया प्रोत्साहन राशि दिहल जात रहल। जवन नामवर सिंह के सम्मान दिहला में 2 हजार रूपया हो गइल। एह बेर एक लाख रूपया प्रोत्साहन राशि के प्रस्ताव दिहल गइल बा।

महामना के नाम पर होखी रेलवे स्टेशन

मासूम अली

वाराणसी। महामना पंडित मदन मोहन माललीय जी के नाम पर जल्दिए ट्रन चलावल जाई। एतने नाहीं बनारण मा इलाहाबाद में से कवनो एगो शहर के रेलवे स्टेशन के नाम भी हामना के नाम पर होई। इ फैसला प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह के अध्यक्षता वाली उ समिति लेहले बिया, जवन महामना के 150वीं जयंती के बरिस पर्यंत मनावे खातिर राष्ट्रीय स्तर पर गठित कइल गइल बा। एह फैसला से रेल मंत्रालय के जानकारी करावत एकरा के क्रियान्वयन खातिर निर्देशित कइल गइल बा।

समिति के सदस्य आ महामना मालवीय मिशन के संरक्षक पन्नालाल जायसवाल पत्रकारन से बातचीत करत में जानकारी दिहले उ बतवलन कि इलाहाबाद के बम्हरौली हवाई अड्डा के नाम भी समहामना के नाम पर होई। उ बतवलन कि गंगा के किनारे बीएचयू के निकटस्थ क्षेत्र में एक करोड़ रूपया के लागत से एगो घाट बनावल जाई जवन महामना के नाम पर होई। एकरा अलावा उनके स्मृति में 150 रूपया आ 5 रूपया के सिक्का भी जारी कइल जाई। साथ हो हाई स्कूल आ इण्टरमीडिएट के कक्षा में भी महामना के विचार दर्शनपढ़ावल जाई, एकरा खातिर यूजीसी आ सीबीएसई के निर्देशित कइल गइल बा। महामना मिशन द्वारा वीएचयू में इंस्टीयूट ऑफ ओरियंटल रिसर्च के प्रस्ताव भी स्वीकृत हो चुकल बा। एह संस्थान में दक्षिण एशियाई देशन के संस्कृतियन पर शोध कइल जाई। एकरा अलावा सेंटर ऑफ एशियन एटडीज के भी स्थापना के प्रस्ताव के हरा झंडी मिल गइल बा। साथ में सेंटर फार रिवाइवल ऑफ हयूमन एथिक्स एण्ड वैल्यूज भी स्थापित कइल जाई। 'मालवीय स्मृति' के नाम से महामना के जनम स्थली इलाहाबाद में एगो म्यूजियम आ पुस्तकालय के भी योजना बा।

दिल्ली स्थित मालवीय स्मृति भवन के प्रथम तल पर मालवीय स्मृति पुस्तकालय खोलल जाई। उत्तराखंड के हरिद्वारा जिला में महामना के मूर्ति के स्थापना कइल जाई। एकरा अलावा महामना पर वृत्तचित्र, वीडियों फिल्म भी बनावें के निर्णय लिआइल बा जवना में महामना के जिनगी के झांकी देखे के मिली।

टटका खबरिया

अमर शहीद मंगल पाण्डेय के प्रति सरकारी उपेक्षा से दुखी बाड़न उनके परिजन

पंकज मिश्र

बलिया। आजादी आन्दोलन के क्रांति के इबारत लिखे वाला देश के पहिलका अमर शहीद मंगल पाण्डेय के फाँसी के दिन 8 अप्रैल के सरकारी अमला के ओर से भुला दिहला पर मंगल पाण्डेय के परिवार के लोग बहुते दुखी बा। सबके मालूम बा कि अंगरेजी हुकुमत के उखाड़ फेंके खातिर देश के आजादी के आन्दोलन के पहिलका अमर शहीद के रूप में मंगल पाण्डेय के 8 अप्रैल के फांसी दिहल गइल रहे।

मंगल पाण्डेय के नाती (पौत्र) अनिल पाण्डेय अमन प्रतिनिधि के बतवलन कि मंगल पाण्डेय के 8 अप्रैल बलिदान दिवस पर केन्द्र अउर प्रदेश सरकार द्वारा कवनों कार्यक्रम आयोजित ना कइला से हमार पूरा परिवार बहुत

दुखी बा। उ कहलन कि सरकार जवना तरह से मंगल पाण्डेय के स्मृति के भुला रहल बिया। एइसे साबित हो गइल बा कि सरकार के शहीदन केप्रति प्रेम महज छलावा बा।

उनके कहनाम बा कि 1857 के क्रांति के महानायक के अबले संसद भवन में ना ता आदमकद प्रतिमा के स्थापना कइल गइल आ ना मंगल पाण्डेय क स्मृति अक्षुण्य रखे खातिर कवनो ठोस पहल कइल गइल। श्री पाण्डेय कहेलन कि पैतृक गॉव नगवा में प्रतिमा के आधारशिला रखेवाला सपा मुखिया मुलायम सिंह यादव के सरकार बनला के बाद आस जागल रहे कि उत्तर प्रदेश के सरकार के ओर से अब निश्चित पहल होई। बाकिर बलिदान दिवस पर आज जवना तरह से सरकारी अमला रस्म अदायगी के रूप में भी मंगल पाण्डेय के स्मरण ना कइलस। एकरा से उनके बहुत पीड़ा भइल बा।

पाकिस्तान में हिन्दू लोगन के पवित्र तालाब सूखला के कगार पर

इस्लामाबाद। पंजाब प्रात में स्थित 900 साल पूरान एगो मन्दिर में बनल पवित्र तालाब सूखला के कगार पर बा।

एगो सीमेंट फैक्ट्री द्वारा नलकूप टयूबवेल लगवला के बाद तालाब के पानी कम होखे लागल बा।

(आईनेस्ट से सभार भोजपुरी अनुवाद)

रणवीर सेना के मुखिया के हत्या

आरा। बिहार प्रदेश के भोजपुर (आरा) जिला के नवादा थाना क्षेत्र के कतिरा मुहल्ला निवासी रणवीर सेना प्रमुख ब्रहमेश्वर सिंह उर्फ मुखिया जी के हत्या शुक्रवार के सबेरही हथियारबंद अपराधियन के ताबड़तोड़ फायरिंग से हो गइल। हत्या के खबर पूरा क्षेत्र में आग खान फइल गइल। सरकारी, गैर सरकारी व्यवसायिक, शिक्षण संस्थान आ कार्यालय बन्द रहल। मृतक ब्रहमेश्वर सिंह मुखिया मूलतः पवना थाना क्षेत्र के खोपिरा गॉव के निवासी रहलन एह घरी आरा के कतिरा मुहल्ला में रहत रहलन। बतावल जाला कि रणवीर सेना प्रमुख पर हत्या, नरसंहार, आर्म्स एक्ट के करीब 2 दर्जन मामला रहल। बथानी टोला नरसंहार सहित आधा दर्जन मामला के छोड़के सगरो में उनके रिहाई हो गइल रहल।

बिहार में बनी दुनिया के सबसे ऊँचा मंदिर

अमन ब्यूरो

पटना। बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद के अध्यक्ष आ महावीर मंदिर पटना के सचिव किशोर कुपाल बतवलन कि पैराणिक आ धार्मिक महत्व के नया राम मन्दिर दुनिया के सबसे बड़हन आ ऊँच मंदिर होई। जवना के प्रस्ताव बिहार के वैशाली जिला के इस्मायलपुर प्रस्तावित एह मंदिर के भूमि पूजन पिछला 4 मार्च के हो गइल।

निर्माणकार्य भी शुरू हो गइल बा। उ बतवलन कि इ मंदिर एक लाख वर्ग फिट क्षेत्र में होई आ इ पांच मंजिला होई। एइमें पांच गो शिखर होई। मंदिर में राम सीता के अलावा राधा–कृष्ण, शिव–पार्वती, गणेश, सूर्य आ दशावतार के मूर्ति स्थापित होई। उ कहलन कि इ स्थान अंकोरनगर के रूप में विख्यात होई। मंदिर के नाम ''विराट अंकोरवाट राम मन्दिर'' होई।

उ कहलन कि कवनों समय पर एह स्थान पर श्रीराम, लक्ष्मण आ ऋषि विश्वामित्र आइल रहलन। कंबोडिया स्थित अंकोरवाट मन्दिर अबले दुनिया के सबसे ऊँचा हिन्दू मन्दिर बा। एकरा निर्माण 12वीं सदी में कंबोडिया के राजा सूर्यदेव वर्मन के शासन काल में भइल रहल। उ कहलन कि हाजीपुर से पॉच किलोमीटर पूरब अंकोरनगर में स्थापित होखे वाला इ मंदिर 360 फीट लम्बा, 360 फीट चौड़ा आ 270 फीट ऊँचा होई।

राजेन्द्र बाबू के घड़ी के निलामी रूक गइल

नई दिल्ली। देश के पहिलका राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्दर बाबू के चोरी हो गइल कलाई घड़ी के स्वीटजरलैण्ड में निलाम करे के घोषणा कइल गइल रहल। बाकिर भारत सरकार के हस्तक्षेप के बाद निलामीकर्ता के स्थागित करावला पर सहमति हो गइल बाड़न।

लोकसभा में सीवान के सांसद ओम प्रकाश यादव के प्रश्न के लिखित जवाब में विदेश राज्यमंत्री परजीत गौर के माध्यम से जानकारी मिलल। बतावल चली कि इ निलामी 13 नवम्बर 2011 के स्वीटजरलैण्ड में होखे वाला रहल। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केपरिवार के सदस्य लोगन के मोताबिक इ घड़ी उनका लग से चोरा लिहल गइल रहल। एह बात के जॉच कइल जा रहल बा कि कइसे इ घड़ी भारत से बाहर ले गइलन।

पिपराघाट–पखनाहा पुल के निर्माण होई

अमन ब्यूरो

बेतियार (पश्चिमी चम्पारन)। बेतिया के उत्तर प्रदेश से सीधे जोड़े खातिर गड़क नदी में पिपराघाट पखनाहा पुल आ रिंग रोड के निर्माण खातिर सरकार हरिहर झंडी दे देहले बिया।

भारत सरकार द्वारा सन् 2000 में प्रस्तवित नक्शा के मोताबिक पुल के लम्बाई सवा दु किलोमीटर होई। एकरा खातिर कुल 54 गो पाया (खम्भा) प्रस्तवित बा। नदी के तल में 130 फीट ऊँचा आ पाँच किलोमीटर लम्बा रिंग रोड प्रस्तावित बा।

गौरतलब बा कि पिपराघाट–पखनहा पुल निर्माण संघर्ष समिति के बैनर तले पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिला के तमकुहीं रोउ के श्यामसुन्दर विश्वकम्म पिपराघाट, पखनाहा, गंडक पुल निर्माण खातिर 15 बरिस से संघर्षरत बाड़न।

उ मा0 मुख्यमंत्री नीतिश कुमार के एगो पत्रक में लिखले बाड़न कि पिपराघाट–पखनाहा पुल निर्माण से राष्ट्रीय राजमार्ग आ रेलमार्ग के अपेक्षा पश्चिमी आ पूर्वी चम्पारन आ कुशीनगर–गोरखपुर के दूरी करीब एक तिहाई हो जाई।

कहानी

कइसे तरबऽ

लल्लन 'सनेही'
देवरिया

झनकू गांव के एगो जानल–मानल मनई रहले। जे गांव के भीतर कवनों तरह के वाद–विवाद, झगड़ा–झंझट के निपटावे में आपन बड़वर भूमिका निभावत रहले आ गांव के छोट–बड़ सभे उनके आदर देत रहल। जिनगी हसी–खुशी से निबहत रहल।

झनकू के कवनों बात के दुख रहल तऽ ई की उनका एकहू लड़िका ना रहले। एगो लड़िका खातीर झनकू अउर उनकर मेहरारू ना जाने केतने देवी–देवती के दुआरी जाके आपन लीलार पटकल लोग आ एगो लरिका खातीर ना जाने के तने झोखा–ओझा लोगन के भरमावला के पाछे–पाछे झाड़ फूंक करावल लोग बाकिर एह लोगन के छवड़ ना भइल। एके गो छवड़ के आसरालगवले–लगवले एह लोगन के चार गो लड़ीकनीन के लाइन लगी गइल।

लरिका ना रहला से ई दुनु बेकत वार–बार दइबो के कोसत आ फेरू अपनी भाग पर आंखी से लोर चुआवस। गांव टोला के लोग उनके लरिकानियने के लरिका मान के पोसे के कहस तऽ उ दूनू परानी इहे कहे लोग कि लरकिये ना नू.. कन्हा दिहे आ मुँह में आगी लगइहे जे हमनी तरब जा? ई बात के सुन–सुन के लरकियनों के मन थोर हो जाव। बाकिर करे स तऽ का? आकनी के बास के त कवनों बात ना रहल। समाज में एही के बोल बाला रहल। आ सब मनई इहे जानत रहले कि जब लरिका माई–बाप के कन्हा देला आ चिता पर मुंह में आग लगावेला त बाप –माई के मुकती मिलेला। लरिका ना रहला पर भाई–भतिजा भा पटिदारी के कवनों मनई से इ रश्म करावल जाला। आगी का कन्हा पर उठावल अरथी से मनई ना तरेले।

झगरू के लइकनी एह बात पर बार–बार सोचे स कि ई विधान भगवान के बनावल ऽ कि मनई के? अगर ई भगवान के बनावल रहीत त लरिका–लइकनी में भगवान एह तरह के भेद ना कइले रहिते। ई जरूर केहू भरद के बनावल उऽ, जवन मरदे लोगन केप्रधानता देहले बा। एह बात के मन में आवते चारू लरिकनी एक होके अपनी महतारी–बाप से कहे सऽ कि माई बाबू घबड़ा लोग मत हमनी चार बहिन तोहलोनी खातीर चार गो बेटा बानी जवन तोहलोनी के हमनिये कन्धा देइब जा आ चीता पर मुह में आग लगाइब जा। तोहलोनी जरूर तरब आ मुकती पा जइब। बेटा–बेटी में कवनों फरक नइखे। इ त भाई–बहिन के बीच बाप के सम्पत्ति खातीर झगड़ा ना होखे एह खातिर बनावल गइल बा।

गते–गते समय वितल। झनकू आ उनके मेहरारू के बुढ़ापा छवलस आ सबसे पहिले उनके मेहरारू के रोग पकडलस। चारू लरकी अपनी महतारी के सेवा में कवनों कोर कसर ना रखली। बाकिर एह दुनिया में जो आइल बा ओकरा इहॉ से जाहू के बा। तबन झनकू के मेहरारू के भी भइल आ ऊ आपन नशवर शरिर छोड़ के एह दुनिया से विदा ले लिहली। एह बार कवनों तरह के वाद–विवाद ना भइल। पटपटिदार अबरू गांव के लोग असमसान घाट तक उनकरी आखरी संस्कार में भाग लिहल। झनकू के संतोष हो गइल कि हमार मेहरारू हमरी हाथे आग पाके तर गइली, मुकती मिल गइल। जब झनकू बिमार पड़ले त उनके चारू लड़की सब अपनी–अपनी धीया पूता के साथ उनके सेवा टहल अबरू दवा–इलाज में लागी गइली। बाकिर जेकर मउअती आ जाई उ एह दुनिया से चल जाई आ सब कुछ एही जा रही जाई। इहे भइल झनकू एक दिन आपन शरीर तियाग दिहले। अब पट–पटिदारन के मौका मिलल। सब ठान दिहले आ कहे लगले कि इनके कन्हा के देई? आ के इनकरी चिता में आग लगाई हमनी सब जब तक इनके अचल सम्पत्ति ना पाइब जा तबले फूके ना जाइब जा। टोला–मुहल्ला के लोगों पटिदारन के बात में हाजी–हुजी भरे लागल। बाकिर लरिकनियों हिम्मती रहली उ सब पटिदार लोगन के एको इंच जमीन देवे के तइयार ना भइली।

चारों लरिकिनी अरथी के चारों कोना–लागी के अरथी उठा लिहली सऽ आ असमसान घाट की ओर चल पड़ली सऽ। गांव के कुछ समझदार लोग साथे–साथ चल पड़ल। इ देखी के पटिदार लोगन के कठया मार दिहलस। एह लोगन के हाल सांप–छछुन्दर के हो गइल। एह लोगन के कुनलसगरो खेल बिगड़ गइल। लजाइल विलार खम्भा नोंचे के तरह उहो लोग मन मसोस के मुंह लटकवले आसमसान घाट पर गइले आ फेरू चीता के जलावे में हाथ बटवले।

चारे लरकी अपनी बुद्धि विवेक से अपनी बाप के मुह में आगी दे के सदियन से आ रहल रूढ़िवादी व्यवस्था के गाल पर चाटा मरली। जहवां एह व्यवस्था के मानेवाला घोर विरोध कइले ओहिजा पढ़ल–लिखल आज के परवेश के लोग एकरा शाबासी दिहले। लरिका लड़की में भेद के एगोबड़हन किला भहरा गइल।

पत्रकारिता दिवस पर गोष्ठी

पंकज कुमार मिश्र दुर्गेश कुमार

सलेमपुर (देवरिया)। ''चूंकि आज जब सच्चाई के केहू गवाह नइखे मिलत अइसने में समाज के सामने गवाही देबे के काम पत्रकारिता करेले। एसे पत्रकारिता के सामने शून्य से शिखर तक समाज के सच्चाई उजागर कइल ही सबसे बड़हन चुनौती बा। उक्त बात भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ द्वारा पत्रकारिता दिवस पर इहॉ के सिंचाई विभाग के निरीक्षण गृह में ''वर्तमान में पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियां'' विषयक संगोष्ठी में एकर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरदार दिलावर सिंह कहलन।

संगोष्ठी के शुभारम्भ सामाजिक कार्यकर्ता डॉ0 चतुरानन ओझा के संबोधन से भइल, उ कहलन कि आज पत्रकारिता के दायरा बढ़ल बा, ओतने ओकरा सामने चुनौती भी बढ़ल बा। सामाजिक चिंतक सुधाकर मिश्र जी कहलन कि आज जब समाज के सब लोगन से विश्वसनियता खतम हो रहल बा तब समाचार पत्रन के भी ओतने ओकर विश्वसनीयता बढ़लबा। वरिष्ठ पत्रकार के0पी0 गुप्ता शोषण के खिलाफ लड़े खातिर पत्रकार लोगन के आहवान कइलन। महासंघ के प्रान्तीय संगठन सचिव मुक्तिनाथ उपाध्याय चुनौतियन से निपटे खातिर संगठन के आवश्यकता पर बलदेहलन। सीता देवी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 मन्नू राय मीडिया के चुनौतियन के रेखांकित करत

पत्रकार लोगन के अलग–अलग संगठन से जुड़ल रहल बतवलन। वरिष्ठ पत्रकार जितेन्द्र उपाधय जी कहलन पत्रकारिता नाहीं बलुक पत्रकारन के समक्ष चुनौती बा। वरिष्ठ पत्रकार पवन मिश्र जी कहलन कि पत्रकारिता जब मिशन से भटकेला तब चुनौती जनम लेला। राम भरोसा चौरसिया जी पत्रकारिता के जोखिम भरल काम बतवलन। सत्येन्द्र प्रताप शाही जी कहलन कि ग्रामीण पत्रकारिता शहरी पत्रिकारित के अपेक्षा जोखिम भरल काम बा। युवा पत्रकार चित्रांश कुमार शुक्ला जी समन्वय स्थापित कइला पर बल देहलन। प्रदीप देव जी साफ–सुथरा पत्रकारित खातिर पत्रकार के दर्द लेबे के कहलन। विनोद श्रीवास्तव जी सब पत्रकार लोगन के एक जुट होखे के आहवान कइलन। गोष्ठी में संजय यादव, राकेश मिश्र, गोविन्द शर्मा, राजेश मणि त्रिपाठी, शिवलाल वर्मा संजय तिवारी, दुर्गेश कुमार, छोटेलाल पाण्डेय, राकेश राय, प्रणव कुमार, पंकज कुमार मिश्र, चन्द्रभूषण सिंह यादव सहित अनेक लोग भाग लिहल।

संगोष्ठी के सफल संचालन भोजपुरी कवि रामनन्द 'रमन' जी कइलन। अन्त में अध्यक्षता करत महासंघ के जिला संयोजक डॉ0 जनार्दन सिंह कहलन कि छोट–बड़ अखबार, छोट–बड़ पत्रकार लोगन के विभेद मेटा के एक जुट होखे के आहवान कइलन। उ कहलन कि आज पूरा देश आ समाज विघठन के दौर से गुजर रहल बा, बाजारवाद आ वैश्विकरण के दौर से पूरा मीडिया जगत आक्रांत बा, एकरा बावजूद भी पत्रकार भाई लोगन के हमेशा सकारात्मक सोच से ही काम करे के चाहीं। निगेटीव के हमेशा पोजिटीव सन्देश दे के पाठक के सामने परासे के चाहीं।

'भोजपुरी में पत्रकारिता के योगदान' विषयक गोष्ठी

रवि प्रकाश रंजन

गोरखपुर। भोजपुरी के विस्तार पिछला दिन के अपेक्षा अब काफी तेजी से हो रहल बा। एकर शब्द सम्पदा बढ़ल बा अउर इ हिन्दी के अउर समपनता प्रदान क रहल बिया। उक्त उद्गार गोरखपुर जर्नलिस्ट प्रेस क्लब में पत्रकारिता दिवस पर आयोजित ''भोजपुरी में पत्रकारिता के योगदान'' विषयक गोष्ठी के बतौर मुख्य अतिथि प्रो0 रामदेव शुक्ल व्यक्त कइलन। उ कहलन कि अब समय आ गइल बा जब सरकार के भी भोजपुरी के ताकत पहिचाने के होखी। विशिष्ट अतिथि डॉ0 एस0पी0 त्रिपाठी कहलन कि भोजपुरी के भाषा के रूप में प्रवर्तित करे खातिर हमन के सार्थक रूप से समवेत प्रयास करे के चाहीं। रामेन्द्र सिंहा 'रामू' कहलन कि हमनिके हीन भावना से मुक्त होखे के चाहीं। अखिलेश सिंह मयंक कहलन कि आवे वाला समय भोजपुरी के ही बा। मनोज तिवारी कहलन कि भोजपुरी मात्र विशेष वर्ग के लोगन के भाषा ना ह।

भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार सुशील वर्मा कहलन कि क्षेत्रीय भाषा से ही जनपदीय धरती के लड़ाई तेज हो सकेला।

एह अवसर पर भोजपुरी के क्षेत्र में विशेष योगदान खातिर सुशील वर्मा, विवेकानंद मिश्र, अखिलेश मयंक के सम्मानित कइल गइल। कार्यक्रम के संचालन नर्वदेश्वर पाण्डेय 'देहाती' कइलन।

।। ऊँ श्री गणेशाय नमः।।

पं0 सुबाष पाण्डेय

(आचार्य)

ज्योतिषी एवं तान्त्रिक

ग्राम–कुरमौली, पोस्ट–टिकमपार,
जनपद–देवरिया (उ0प्र0) मो0: 9450481938

आध्यात्मिक पावर से एगो अनूठा इलाज

देवरिया। भोजपुरी क्षेत्र के देवरिया जनपद के बनकटा विकास खण्ड के अन्तर्गत ग्राम कड़सरवा बुजुर्ग (बहेरा टोला) निवासी 58 वर्षीय डॉ0 राम अशीष सिंह जी गायत्री मंत्र आ अन्य आध्यात्मिक साधना के द्वारा भिन्न–भिन्न तरह के करिश्माई इलाज कर रहल बाड़न। इ 1977 में भूगोल विषय से एम.ए. के पढ़ाई पूरा कइलन आ तबसे बेरोजगारी के शिकार बाड़न। आपन खेती गृहस्थी के बलपर घर के साथ समाज सेवा भी करे लन। आध्यात्मिक क्षेत्र में एगोनया खोज कइले बाड़न इनके कहनाम बा कि ''मनुष्य के दिमाग पर यदि आध्यात्मिक किरण के प्रक्षेपित कइल जाब त ओह व्यक्ति के अन्दर रोग से लड़े के क्षमता बढ़ जाई।''

एह पद्वति के द्वारा पुरान से पुरान आ असाध्य कहे जाये वाला बीमारी में आशा के अनुरूप सफलता मिल जा सकेला। उदाहरण के तौर पर मान ली कि कवनों आदमी शरीर के कवनों अंग में भा पूरा शरीर में दरद से परेशान बा आ उ इलाज कराके आपन सगरों रूपया आ टाइम बर्बाद कइला के बाद कवनों आराम नइखे होत त अइसन रोगी जवन निराश बा ओकरा के आध्यात्मिक इलाज के द्वारा 5 मिनट में ही लाभ होखे लागी।

सम्पर्क :– डॉ0 रामाशीष सिंह
ग्राम– कड़सवा बुजुर्ग (बहेरा टोला), पोस्ट–रहिमपुर, जिला–देवरिया (उ0प्र0)–274703, मो0–07376035950,

रवि इण्टर प्राइजेज

प्रो0 रवि प्रकाश रंजन

जगन्नाथपुर, बेतिआहाता,
गोरखपुर मो0: 09565033734

देव अल्ट्रसाउण्ड एक्सरे

डॉ0 प्रियंका शर्मा

हास्पिटल रोड, सिवान, बिहार
मो0 : 09708785563

पृष्ठ एक के शेष

आई सभन.....

विधान भवन के तिलक हाल में मुख्यमंत्री जी सगरो जिला के पुलिस कप्तान, डीआईजी, आईजी, प्रमुख सचिव आ सचिव लोगन के एक साथे बइठक कइलन।

मुख्यमंत्री जी कहलन कि उनके सरकार कानून व्यवस्था से कवनों समझौता ना करी। जरूरतपड़ला पर कठोर फैसला लिहल जाई।

लखनऊ में मेट्रो.....

दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि डॉ0 ई0 श्रीधरन बतवलन कि बुलेट ट्रेन खातिर त्रिवेन्द्रम से कासरगा (केरल) के बीच 560 किमी0 लम्बा रेल लाइन बिछावल जाई। जापान के तकनीकी आ आर्थिक सहायता वाला इ प्रोजेक्ट जनवरी 2013 से शुरू होई। 2021 तक एह ट्रैक पर हाई स्पीड ट्रेन दउरे लागी। एह प्रोजेक्ट पर उत्तर प्रदेश सरकार के रूख सकरात्मक बा। यूपी के अलावा तमिलनाडू, जयपुर आ कर्नाटक में भी मेट्रो रेल सेवा शुरू होई।

पीढ़ियन खातिर...

उहां के कहनीं कि कुंवर सिंह जइसन वीर जोद्धा समय आ काल के सीमा से बन्हाइल ना रहेले। उ देश खातिर जवन कुछ कइलन ओकरा के कबो केहूं भुला नइखे सकत। कार्यक्रम के शुरूआत भोजपुरी कलाकार गजाधर ठाकुर द्वारा वीर कुंवर सिंह के यशगान से भइल एह अवसर पर कुंवर सिंह फांउडेसन के अध्यक्ष निर्मल सिंह राष्ट्रपति के स्मृति चिन्ह भेंट कइलन।

गृहस्थ योगी के अंतिम यात्रा

आचार्य प्रतापादित्य

'भोजपुरिया अमन' के तेइस मार्च 2012 अंक बदे हम आचार्य प्रतापदित्य जी के गोरखपुर स्थित आवास पर जब मार्च के पहिला हफ्ता में गइल रहलीं त उ हमेशा के तरह खुश और प्रसन्नचित्त रहलें। बावजूद एकरा के कि उनके खाने वाली नली में डॉक्टर लोगन कैंसर बता चुकल रहले। एतना भयंकर बीमारी के बावजूद उनकर दिनचर्या जस के तस रहल। कई गो आध्यात्मिक जिज्ञासु हमेशा के तरह जुटल रहलन आ आचार्य जी उनकर शंका समाधान करत रहलन। उनसे मिले वाले भयभीत रहलन बाकिर आचार्य जी पूर्ववत रहलन।

उनसे 'तंत्र साधना में सिद्धियन के आयाम' विषयक लेख लेके हम चलि अइलीं। हमके एह बाति के तनिको आहट नाहीं रहल कि आचार्य जी के एतना जल्दी शरीर छूटि आई। संभवतः होशो–हवास में आचार्य जी के ई लेख अंतिम योगदान रहल लेखन के क्षेत्र में।

आचार्य जी के स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव दिसम्बर 2011 के अंतिम हफ्ता से शुरू भइल। गोरखपुर के डॉक्टर ट्यूमर के संदेह जतवलन फिर उनके टाटा के मुम्बई स्थित कैंसर इंस्टीयूट ले जाइल गइल। उहां भी डॉक्टर ट्यूमर के कैंसर बतवलन। फिर आचार्य जी के चिकित्सा लखनऊ में एस.जी.पी.जी.आई. के डॉ0 शालीन कुमार शुरू कइलन। दस दिन के रेडियेशन से सेंकाई के क्रम चलल। अइसन लागत बा कि अस्सी वर्ष के आचार्य जी के शरीर रेडियेशन बर्दाश्त नाहीं कइ पवलस। 28 अप्रैल की रात में गोरखपुर में उनके नाक आ पेशाब के रास्ते खून आइल त उनके बागची नर्सिंग होम में दाखिल कइल गइल। डॉ0 रंजना बागची उनकर निष्ठावान शिष्या रहलिन। लेकिन होनी के केहू टालि नाहीं सकता रहल। पहली मई के सुबह 9.45 बजे आचार्य जी के भौतिक शरीर अंतिम सांस ले कर महायात्रा पर चलि गइल। आचार्य जी के अंतिम समय में उनकर मंझिला पुत्र प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी, पुत्रवधू मीना त्रिपाठी, छोटी बहिन (आचार्य जी के) जयंती पाण्डे आउर गांव के मैनेजर सुरेन्द्र राम रहलन।

एह तरह पूर्वी उप्र. के एह अदभुत और अद्वितीय गृहस्थ योगी आचार्य प्रतापदित्य के शरीर पहली ई एकादशी के दिन छूटि गइल। पूरे भारतवर्ष में ई समाचार फोन आ इंटरनेट के जरिये फैलि गइल। आचार्य जी के इच्छानुसार अंतिम संस्कार आउर श्राद्धानुष्ठान समारोह क्रमशः 2 मई आउर 4 मई 2012 के आनन्द मार्ग पद्धति से सम्पन्न भइल।

आचार्य जी के जनम 24 मई 1933 के ग्राम विश्वनाथपुर (सरया–तिवारी) विकास खण्ड खजनी जिला गोरखपुर में भइल रहल। पिता पं0 भानु प्रताप राम त्रिपाठी आ माता पार्वती देवी रहलिन। एम.ए.एल.एल.बी. इलाहाबाद वि0वि0 से कइला के बाद वर्ष 1959 से आचार्य जी गोरखपुर में वकालत शुरू कइलीं। वर्ष 1966 से 1979 तक शासकीय अधिवक्ता (आपराधिक) आ 1964 से वर्ष 2000 तक दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय में विधि प्रवक्ता (अंशकालिक) रहलीं। साक्ष्य विधि पर उनकर जबर्दस्त पकड़ रहल। कानून के क्षेत्र में अबहिन भी लोग उनकर लोहा मानत रहलन। कचहरी में ही वर्ष 1960 के लगभग आचार्य जी अवैतानिक मजिस्ट्रेट सच्चिदानंद जी के सम्पर्क में अइलें। कुछ वर्ष में निकटता बढ़ल आ आचार्य जी सनातन हिन्दू धर्म के जाति–पाति संस्कार से ऊपर उठि के वैज्ञानिक अध्यात्म आ योग पद्धति के एक नया संगठन 'आनन्द मार्ग' से जुड़ि गइलें। इनके आचार्य रघुनाथ जी दीक्षा दिहलन। बाद में तात्विक आ आचार्य पद के दीक्षा दिहलन। बाद में तात्विक आ आचार्य पद के दीक्षा सीधे इनकर गुरू श्री आनन्द मूर्ति जी प्रदान कइलन। आचार्य जी गृहस्थ धर्म के जेतना कुशल निर्वाह कइलें ओसे ज्यादा आनन्द मार्ग के प्रचार प्रसार में आपन जीवन समर्पित कइ दिहलें।

आचार्य जी के पास लेखन के अथाह सम्पदा रहल। कई गो किताब छपल–जवना में प्रमुख हवे–तंत्र साधना की रहस्य कथाएं, परा–मनोविज्ञान, राजयोग, ईश्वर दर्शन : भ्रान्ति और सत्य श्री कृष्ण की गुरूदक्षिण, अनुभूतियों के गीत, भोजपुरी में श्रीमद भागवत सार तत्व विवेचनी, पथ कथ इतिहास, समचित चिकित्सा निदेशिका, शब्द चयनिका भाषा विज्ञान, भागवत धर्म, विद्वतजनों की दृष्टि में आनन्द मूर्ति, इत्यादि।

आचार्य जी के इच्छानुसार परम्परा से हटि के 4 मई के उनके श्रद्धानुष्ठान के अवसर पर श्राद्ध के बाद आचार्य जी के लिखल एक सद्य : प्रकाशित पुस्तक ''ईश्वर दर्शन : भ्रान्ति और सत्य'' तथा उनके व्यक्तिव पर उनके सुपुत्र प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'अदभुत और अद्वितीय' के विमोचन आ लोकार्पण भी भइल। नगर विधायक डॉ0 राधा मोहन दास अग्रवाल, केन्द्रीय निर्वाचन उपायुक्त सुधीर त्रिपाठी आई.ए.एस., विधान परिषद के सभापति गणेश शंकर पाण्डेय आ गोरखपुर दी0द0उ0 विश्वविद्यालय के कुलपति भी मौजूद रहलन। उपस्थित जन समुदाय के नगर विधायक आश्वासन दिहलें कि आचार्य जी के स्मृति में उनके आवास वाले मार्ग के नामकरण आचार्य प्रतापदित्य लेन के रूप में कइल जाई। विश्वविद्यालय के विधि विभाग में उनकरा यदि में व्याख्यान माला चलावल जाई।

'अदभुत और द्वितीय' पुस्तक में आचार्य जी कहिले बाड़न कि ''मैं जीवन्मुक्ति के समीप अपने को स्थित पाता हूं, किन्तु, अब मोक्ष की धारणा बदल गई है। तारक ब्रह्म के साधना की उपलब्धि है उनके धरा पर आगमन के साथ पुनः आना।'' उनके निधन पर श्रद्धांजलियन के सिलसिला जारी बा। श्राद्ध में आनन्द मार्ग के मुख्यालय कोलकाता, रांची, आनन्द नगर से पुरोधा प्रमुख के प्रतिनिधि अवधूत सन्यासीगण, गोरखनाथ मंदिर के महंत अवैधनाथ आ सांसद योगी आदित्य नाथ जी के प्रतिनिधि सहित तमाम मार्गी–गैर मार्गी उपस्थित रहलें। आचार्य जी के सपना आनन्द मार्ग के समाज में प्रतिष्ठित कइल रहला आ भोजपुरी राज्य के स्थापना कइला के रहल। एहि दिशा में हर प्रयास ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हो सकेला।

''भोजपुरिया अमन'' आचार्य जी के देहावसान पर उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करत बा आ ई प्रार्थना भी करि रहल बा कि आचार्य जी के अप्रकाशित साहित्य के छपवला बदे संगठन के आगे आवे के चाहीं।

डूब गइल भोजपुरिया सितारा 'बावला'

भोजपुरी के तुलसीदास के उपधि से विभूषित रामजियावन दस 'बावला' के 90 बारिस के उमिर में उनकर मउअत से भोजपुरी समाज के एगो सितारा डूब गइल। उनका मउअत से भोजपुरी समाज आहत बा। रामजियावन दउस 'बावला' के जनम एक जून 1922 के चन्दौली जिला के चकिया तहसील के भीषमपुर गॉव के एगो विश्वकर्मा (लोहार) परिवार में भइल रहल। उनकर बाबूजी रामदेव विश्वकर्मा आपना जातीय कारोबार से जुड़ल रहलन।

उनका माई सुदेश्वरी देवी घरनी मेहरारू रहलीं। रामदेव जी के चार गो बेटा आ दु गो बेटी में रामजियावन सबसे बड़ रहलन। ओ बेरा उनका पढ़ाई लिखाई कइसूहू कक्षा चार ले भइल रल, ओकरा बाद पढ़ाई–लिखाई छोड़ के दोबारा स्कूले ना गइले। उनका बाबजी संगीत आ रामायण के जानकार रहले।

रामजियावन दास 'बावला' के बिआह 16 बरिस में ही मनराजी देवी के साथ हो गइल रहल। घर के माली हालत ठीक ना रहला के कारण माल–मवेशी राख के चरावे लगल। भईंस चरावत–च2 उ गीत गावस आ गीत गावते–गावत कविता करे लगाल। उ जब भजन के रचना कइलन त ओकरा के छपावे खातिर बनारस अइलन। दोसरका दिन नहाये खातिर दशाश्वमेघ घाट अइलन त ओही घोटे पर उनके केहू बावला कहि के बोला देहलस। बाद में उ बावला आपन उपनाम रख लेहलन।

बावला जी किसानन के संघर्ष, तीज त्योहार, समाज के गरीबी आदि पर जियादा रचना कइलन। बरिस 2002 में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल वीरेन्द्र शाह भोजपुरी के सबसे बड़हन सम्मान देहले रहलन। उनके निधन पर भोजपुरिया अमन परिवार आपन श्रृद्धा सुमन अर्पित कर रहल बा।

बाबा जय गुरूदेव श्रद्धांजलि

भक्तन के बोरा–चट्टी पहिनवला से लेके बाबा जयगुरूदेव जी के हरदम आलोचना होत रहल। बाकिर इ चही–बोरा के एतना महत्व रहे कि इ सभ केहू ना पहिन सके। बाबा जयगुरूदेव सशरीर भले एह दुनिया में नइखन बाकिर आपना भक्त लोगन के ह्रदय में हमेशा विराजमान रहिहें। जय गुरूदेव के 18 मई के मथुरा स्थित आपना आश्रम में आपना नश्वर शरीर के त्याग के ब्रहमलीन हो गइलन। उनके करीबी लोगन के मुताबिक 116 बरिस के उ रहलन।

उहा के जीव रक्षा खातिर आपन एगो लक्ष्य बनाके शाकाहार भोजन के प्रचार अभियान के रूप में कइनीं। उनके भक्त मांसाहार आ नशा से हमेशा मुक्त रहेलन। बहुत पहिले उनके नारा रहल ''जे अंडा, मछली खायेगा सन् अस्सी तक मर जायेगा। उनके मुख्य नारा रहल ''जयगुरूदेव, सतयुग आयेगा''।

जय गुरूदेव के असली नाव रहल तुलसीदास जी महाराज। इनके जनम उत्तर प्रदेश के इटावा जिला के एगो छोटहन गांव खिटोरा में भइल रहल। बचपन में ही माता–पिता के देहांत हो गइल रहल। बचपन में ही सत्य के खोज में निकलल। बाबा एगो ग्रहस्थ संत घूरेलाल जी के आपन गुरू मान लेहलन। घूरेलाल जी अलीगढ़ के चिरौली गॉव के निवासी रहलन। उहे उनके जयगुरूदेव नाम से पुकारत रहलन। बाद में उनके भक्तगण उन्हीं के जयगुरूदेव कहे लगलन। 1953में गुरूस्थान चिरौली के नाम पर मथुरा में चिरौली संत आश्रम के स्थापना क के आपना मिशन के शुरूआत कइलन। आज बाबा जयगुरूदेव भले ही एह दुनिया में नइखन बाकिर आपन संदेश आ शिक्षा से पूरी दुनिया के मार्गदर्शन करत रहीं। भोजपुरिया अमन उनके निधन पर श्रद्धासुमन अर्पित कर रहल बा।

पदमश्री वीरेद्र प्रभाकर के 'सुलभ–कला–सर्जक–सम्मान

सुलभ–स्वच्छता आ समाजिक सुधार–आंदोलन के संस्थापक डॉ0 विन्देश्वर पाठक जी के जनम दिन के अवसर पर मानल–जानल फोटो–पत्रकार पदमश्री वीरेन्द्रप्रभाकर के 'सुलभ–कला–सर्जक–सम्मान' से सम्मानित कइल गइल। पुरस्कार स्वरूप उनके दु लाख रूपया के राशि, प्रमाण–पत्र,अंगवस्त्रम, अउर नारियल प्रदान कइल गइल। डॉ0 पाठक जी द्वारा संस्था के ओर से उनके इ सम्मान बरिस 1947 के पहिले से आज–तक फोटो पत्रकारिता के द्वारा राष्ट्र आ सामाजिक सेवा खातिर दिहल गइल बा।

अनन्त सेशा दास

डण्बेण् प्प्ण्ेण् डण्ज्मबीए प्प्ज्ञाळ्च आदि उपाधि के साथ भगवान कृष्ण खातिर पूरा जीवन समर्पित क के दुनिया में प्रचार प्रसार करे वाला अनन्त सेशा दास जी के अमित सिंह (इंजी. छात्र) भोजपुरिया अमन के प्रतिनिधि द्वारा भोजपुरिया अमन भेंट करते

आकाशवाणी लखनऊ के 75 बरिस पुरा भइला के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में सम्बोधित करता राजेन्द्र राजन अउर बलवीर सिंह बिचड़ी

अम्बेडकर जयंती के पूर्व संध्या में आकाशवाणी लखनऊ के सभागार में आकाशवाणी नई दिल्ली के पूर्व उपमहानिदेशक श्री एम0पी0 लेले जी द्वारा व्याख्यान करत

अनाथ आश्रम

विद्यासागर आरोग्य सेवा संस्थान लामीचौर, गोपालगंज

"तुलसी पंछी के पिए, घटे न सरिता नीर।
धर्म किए धन ना घटे, जो सहाय रघुबीर।"

प्यारे भाइयों एवं बहनों,

आइए हम आपके साथ मन में बहुत चीर संचित विचारधारा को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए, आरोग्य सेवा संस्थान एवं अनाथालय को शुरू करने जा रहे हैं। जिसमें बहुत से अनाथ बच्चे एवं बच्चियाँ जो समाज में बहुत दिनों से उपेक्षित है एवं जिन्हें समाज घृणा की दृष्टि से देखता है। लेकिन इसमें उनका कोई दोष नहीं, ये तो हमारे ही समाज की देन है। वे भी कर्ण के समान तेजस्वी हो सकते हैं अगर उन्हें समुचित मार्गदर्शन दिया जाय। इसी आशा को लेकर हम आपके समक्षइस अनाथालय का शुरूआत करने जा रहे हैं, जिसमें आपका भी सहयोग एवं मार्गदर्शन स्वीकार्य होगा। हम हैं आप के आकांक्षाओं के अभिलाषी :–

डॉ0 विद्यासागर गुप्ता एवम् लामीचौर की ग्रामीण जनता

"मैं न राज्य चाहता हूं न स्वर्ग की इच्छा रखता हूं, न मोक्ष चाहता हूं, मैं तो यही चाहता हूं कि दुख से तपे हुए ग्रामीण जनता की पीड़ा का नाश हो।

नोटः– (1) अनाथ एवं वृद्ध लोगों के लिए निःशुल्क चिकित्सा।
(2) लावारिस बच्चों का लालन–पालन व शिक्षा मुफ्त
(3) बालिकाओं का सामूहिक विवाह।

सम्पर्क –
मोबाइल नं0 : 09939183335